ग्रंथाङ्क 32

जुगल विलास

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान संपादक-पुरातत्त्वाचार्य, जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]

ग्रन्थाङ्क ३२

कवि पीथल विरचित

जुगल विलास

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

Rajasthan Oriental Research Institute, Jaipur

जयपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान देशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान संपादक
पुरातत्त्वाचार्य, जिनविजय मुनि
[ऑनररि मेंबर ऑफ़ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]
सम्मान्य सदस्य
भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूना; गुजरात साहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोधनप्रतिष्ठान, होशियारपुर; निवृत्त सम्मान्य नियामक-
(ऑनररि डायरेक्टर) – भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ग्रन्थाङ्क ३२

कवि पीथल विरचित

जुगल विलास

प्रकाशक
राजस्थान राज्याज्ञानुसार
संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर
जयपुर (राजस्थान)

कवि पीथल विरचित

जुगल विलास

संपादिका
श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारीजी चूण्डावत
रावतसर

प्रकाशनकर्त्ता
राजस्थान राज्याज्ञानुसार
संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मंदिर
जयपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१५] भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८० [खिस्ताब्द १९५८

प्रथमावृत्ति १००० मूल्य १ रु० ७५ न० पै०

मुद्रक—जयपुर प्रिन्टर्स, जयपुर

विषय-सूची



सञ्चालकीय वक्तव्य

मध्यकाल में भक्ति–आन्दोलन से लगभग सारा ही भारत प्रभावित हुआ है। राजस्थान निवासी साहित्यकारों ने भी भक्ति–आन्दोलन से प्रभावित होकर श्री राधा-कृष्ण सम्बन्धी कई महत्त्वपूर्ण रचनाएं प्रस्तुत की हैं। भक्ति–आन्दोलन सम्बन्धी व्रज-भाषा की प्रारंभिक रचनाओं में शान्तरस और भक्तिभावना को प्रधानता दी गई है किन्तु पीछे की रचनाओं में मुख्यतः शृङ्गाररस-निरूपण और संस्कृत लक्षण ग्रन्थों का अनुकरण ही लक्षित होता है।

राजस्थान में संस्कृत और राजस्थानी भाषा-ग्रन्थों के उपरान्त व्रजभाषा-ग्रन्थों की प्रचुरता है। राजस्थान में व्रजभाषा ग्रन्थों की विशेष उपलब्धि के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—

१. राजस्थान व्रज का पड़ौसी प्रदेश है, जिससे व्रजभाषा साहित्य का राजस्थान पर प्रभाव हुआ और राजस्थान में व्रजभाषा ग्रन्थों की रचना एवं सुरक्षा हुई।

२. भक्ति आन्दोलन और मुख्यतः कृष्णोपासना से राजस्थानी भक्त विशेष प्रभावित हुए। राजस्थानी जन मथुरा, वृन्दावन आदि व्रज तीर्थों की यात्रा करते रहे और व्रजवासी भक्त भी राजस्थान में आश्रय प्राप्त करते रहे। वल्लभ सम्प्रदाय के तीन प्रधान तीर्थ राजस्थान में, नाथद्वारा, कांकरौली और कोटा में स्थापित हुए। इस प्रकार राजस्थान में व्रजभाषा साहित्य का प्रचार हुआ।

३. राजस्थान के ग्रन्थ-भण्डारों में अन्य भाषा-ग्रन्थों के साथ व्रजभाषा ग्रन्थ भी सुरक्षित रह गये क्योंकि राजस्थान के कई ग्रन्थ-भण्डार एकान्त और दुर्गम स्थानों में स्थित रहे हैं एवं यहां बाहरी आक्रमणों का प्रभाव कम हुआ है।

कवि पीथल विरचित "जुगल विलास" नामक काव्य भी राधाकृष्ण की लीलाओं से सम्बन्धित व्रजभाषा ग्रन्थ है। राजस्थान में उपलब्ध प्रस्तुत काव्य-ग्रन्थ एक राजस्थान निवासी क्षत्रिय भक्त की सरस कृति है इसलिये "राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला" में इस काव्य को प्रकाशित किया जा रहा है। व्रजभाषा साहित्य के रीतिकालीन श्रेष्ठ कवि बिहारी के उपरान्त राजस्थान के ही एक दूसरे व्रजभाषा के कवि पीथल की उत्कृष्ट काव्य कृति "जुगल-विलास" को साहित्य-संसार में प्रकट करते हुए हमें प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। प्रस्तुत कृति को प्रकाश में लाने का मुख्य श्रेय राजस्थान की विदुषी लेखिका श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारीजी चूण्डावत को है। प्रस्तुत ग्रन्थ के साथ ही श्रीमती रानी चूण्डावतजी ने वीरवांण और कवीन्द्रकल्पलता आदि ग्रन्थों का सम्पादन किया है जिन्हें "राजस्थान पुरातन ग्रन्थ माला" में प्रकाशित किया जा रहा है।

आशा है कि भविष्य में भी श्रीमती रानी चूण्डावतजी हमारे साहित्य को प्रकाश में लाने का अनुकरणीय प्रयास करती रहेंगी।

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर
विजया दशमी पर्व, २०१५ वि० सं०

मुनि जिनविजय
संमान्य सञ्चालक

विषय-सूची



सञ्चालकीय वक्तव्य

मध्यकाल में भक्ति–आन्दोलन से लगभग सारा ही भारत प्रभावित हुआ है। राजस्थान निवासी साहित्यकारों ने भी भक्ति–आन्दोलन से प्रभावित होकर श्री राधा-कृष्ण सम्बन्धी कई महत्त्वपूर्ण रचनाएं प्रस्तुत की हैं। भक्ति–आन्दोलन सम्बन्धी ब्रज-भाषा की प्रारंभिक रचनाओं में शान्तरस और भक्तिभावना को प्रधानता दी गई है किन्तु पीछे की रचनाओं में मुख्यत: शृङ्गाररस-निरूपण और संस्कृत लक्षण ग्रन्थों का अनुकरण ही लक्षित होता है।

राजस्थान में संस्कृत और राजस्थानी भाषा-ग्रन्थों के उपरान्त ब्रजभाषा-ग्रन्थों की प्रचुरता है। राजस्थान में ब्रजभाषा ग्रन्थों की विशेष उपलब्धि के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—

१. राजस्थान ब्रज का पड़ौसी प्रदेश है, जिससे ब्रजभाषा साहित्य का राजस्थान पर प्रभाव हुआ और राजस्थान में ब्रजभाषा ग्रन्थों की रचना एवं सुरक्षा हुई।

२. भक्ति आन्दोलन और मुख्यत: कृष्णोपासना से राजस्थानी भक्त विशेष प्रभावित हुए। राजस्थानी जन मथुरा, वृन्दावन आदि ब्रज तीर्थों की यात्रा करते रहे और ब्रजवासी भक्त भी राजस्थान में आश्रय प्राप्त करते रहे। वल्लभ सम्प्रदाय के तीन प्रधान तीर्थ राजस्थान में, नाथद्वारा, कांकरौली और कोटा में स्थापित हुए। इस प्रकार राजस्थान में ब्रजभाषा साहित्य का प्रचार हुआ।

३. राजस्थान के ग्रन्थ-भण्डारों में अन्य भाषा-ग्रन्थों के साथ ब्रजभाषा ग्रन्थ भी सुरक्षित रह गये क्योंकि राजस्थान के कई ग्रन्थ-भण्डार एकान्त और दुर्गम स्थानों में स्थित रहे हैं एवं यहां बाहरी आक्रमणों का प्रभाव कम हुआ है।

कवि पीथल विरचित "जुगल विलास" नामक काव्य भी राधाकृष्ण की लीलाओं से सम्बन्धित ब्रजभाषा ग्रन्थ है। राजस्थान में उपलब्ध प्रस्तुत काव्य-ग्रन्थ एक राजस्थान निवासी क्षत्रिय भक्त की सरस कृति है इसलिये "राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला" में इस काव्य को प्रकाशित किया जा रहा है। ब्रजभाषा साहित्य के रीतिकालीन श्रेष्ठ कवि बिहारी के उपरान्त राजस्थान के ही एक दूसरे ब्रजभाषा के कवि पीथल की उत्कृष्ट काव्य कृति "जुगल-विलास" को साहित्य-संसार में प्रकट करते हुए हमें प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। प्रस्तुत कृति को प्रकाश में लाने का मुख्य श्रेय राजस्थान की विदुषी लेखिका श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारीजी चूण्डावत को है। प्रस्तुत ग्रन्थ के साथ ही श्रीमती रानी चूण्डावतजी ने वीरवांण और कवीन्द्रकल्पलता आदि ग्रन्थों का सम्पादन किया है जिन्हें "राजस्थान पुरातन ग्रन्थ माला" में प्रकाशित किया जा रहा है।

आशा है कि भविष्य में भी श्रीमती रानी चूण्डावतजी हमारे साहित्य को प्रकाश में लाने का अनुकरणीय प्रयास करती रहेंगी।

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर
विजया दशमी पर्व, २०१५ वि० सं०

मुनि जिनविजय
संमान्य सञ्चालक

भूमिका

कविवर पीथल का "जुगल विलास" एक उत्कृष्ट काव्य ग्रन्थ है जिसमें काव्य-परिपाटी के अनुसार श्रीकृष्ण की शृङ्गारिक लीलाओं का माधुर्य्यपूर्ण व्रजभाषा में मोहक वर्णन किया गया है। प्रस्तुत काव्य के कई छन्द उच्चकोटि के हैं और बिहारी दोहावली की समानता में सरलता से तुल्यमान हो सकते हैं। उदाहरण के लिये निम्नलिखित छन्दों को लिया जा सकता है—

"झीने पटमें मुष दियें, सोहत सरस सुहाग ।
मोहन राधे देषि कें, रहे ठगोरी लाग ॥६॥
निरत करत व्रजकुंजमें, लिये दुहूं गरबांह ।
मानों दीपत दामिनी, घन सांवनके माह ॥७॥
अरस परस निरषत दुहूं, मुसकत द्रगन मरोर ।
ता छिनकी छबि देषिकें, वारौं रतपति करोर ॥८"

मध्यकालीन व्रजभाषा साहित्य कृष्ण की शृङ्गारिक लीलाओं से ओत:प्रोत है। नष-सिष वर्णन, परस्परानुराग, नायक-नायिका निरूपण, दूती वचन, शृङ्गारिक संयोग और वियोग वर्णन तथा विविध रस, छन्द और अलंकारवर्णन के अतिरिक्त किसी अन्य विषय की ओर तत्कालीन व्रजभाषा-कवियों की दृष्टि सामान्यतः नहीं रही है।

उपरोक्त विषयों के निरूपण में भी प्राय: संस्कृत काव्यग्रन्थों का ही अनुसरण किया गया है। इसलिये राधाकृष्ण की शृङ्गारिक लीलाओं से सम्बन्धित तत्कालीन हजारों काव्य-ग्रन्थों में मौलिकता के दर्शन वास्तव में वहुत कम होते हैं। सम्वन्धित युग के बिहारी और देव की कोटि में कम ही कवियों की गणना हो सकती है। जुगल विलास के कर्ता कविवर पीथल को बिहारी और देव से उच्च नहीं तो वहुत निम्न कोटि का भी नहीं कहा जा सकता।

"जुगल विलास" नामक काव्यग्रन्थ में निम्नलिखित विशेषताओं का समावेश हुआ है—

(१) कवि ने कृष्ण की शृङ्गारिक लीलाओं को ही विशेष महत्त्व दिया है। कृष्ण की बाल लीलाओं और महाभारत से सम्बन्धित कार्यों को वास्तव में उपेक्षित कर दिया गया है।

(२) काव्य में सुपरिष्कृत सरस व्रजभाषा का उपयोग किया गया है।

(३) सम्बन्धित काव्य के प्रणेता स्वयं शासक अथवा शासक परिवार से सम्बन्धित रहे हैं।

(४) तत्कालीन राज दरवार से सम्बन्धित विलासिता, ऐश्वर्य, रहन-सहन, वेष-भूषा, आचार विचार और गौरव-गरिमा का प्रस्तुत काव्य ग्रन्थ पर विशेष प्रभाव पड़ा है। इस प्रकार राधाकृष्ण देवत्व की कोटि के न होकर सामान्य नायक-नायिका हो गये हैं।

(५) संस्कृत लक्षण ग्रन्थों का प्रभाव प्रस्तुत काव्य पर विशेष है। जिसके परिणाम-स्वरूप काव्यगत मौलिकता के दर्शन दुर्लभ हो गये हैं।

(६) काव्य में हृदय पक्ष की अपेक्षा कला पक्ष को अधिक महत्त्व दिया गया है जिसके फलस्वरूप हार्दिक भावों की अपेक्षा चमत्कार की प्रधानता हो गई है।

(७) काव्य-चमत्कार के साथ ही पाण्डित्य-प्रदर्शन, बहुज्ञता प्रदर्शन और शृङ्गारिक निरूपण को विशेष महत्त्व दिया गया है।

ग्रन्थ में वर्णित विषय

ग्रन्थ के प्रारम्भ में राधाकृष्ण की स्तुति उत्कृष्ट दोहा छंदों में की गई है। प्रस्तुत स्तुति-छन्दों में उक्ति-चातुर्य और भाव-गांभीर्य के साथ भाषा सौन्दर्य्य के दर्शन भी सहज में ही हो जाते हैं।

स्तुति के उपरान्त राधाकृष्ण का परस्परानुराग सवैया छन्द में उत्कृष्ट कोटि का वर्णित हुआ है। इन छन्दों की अन्तिम पंक्तियों में शाब्दिक चमत्कार बहुत स्वाभाविक रूप में व्यक्त हुआ है—

"देषत छैल गुपाल मनोहर, बाल रसाल सुधें बिसरावें।
बेटी बिलोकत ही व्रषभानुकी, लाल महा चितमें ललचावें॥
पीथल दोऊ यों आपुसमें रस-रीति हिये धरि नेह बढावें।
भांवतीके मन भाँवतो भांवत, भांवती भांवतेके मन भावे॥१२
दोऊ बिराजत रूप उजागर, नागरि नागर नेह बढावन।
वा बिन वा कल नाहिं परे, अरु वा बिन वा पल नाहिं सुहावन॥
पीथल बाल गुपालनजी करहें, नित कांम कटाछ उपावन।
भांवनको मन भांवन भांवन, भांवन हैं मन भांवन भांवन॥१३"

श्री राधा का शृङ्गार-वर्णन प्रस्तुत काव्य-ग्रन्थ की एक विशेषता है क्योंकि यह परम्परानुसार होते हुए भी उत्कृष्ट भावों और उक्ति-चमत्कारों से परम आकर्षक हो गया है। यहां कवि की कुछ कल्पनाएं विशेष उल्लेखनीय हैं। जैसे—

"करकी छगुनी मेंहदी छबिसों लषि नैन लगावत अंजनकों।
वह रूप बिराजत पीथल यों मनु गुंज चुगावत षंजनकों॥१७"
"कुचके ढिग मोतिनको हरवा गलसों छबि पीथल यों गलकी।
मनु कंचनके गिर द्वे बिच है, यह गंग तरंगन सो पलकी॥"

मेंहदी लगे हाथों से अंजन लगाने की तुलना खंजन को गुंज चुगाने से और कुच के मध्य विराजमान मोतियों की माला की तुलना दो स्वर्ण शिखरों के मध्य प्रवाहित गंग-धार से उपयुक्त ज्ञात होती है।

प्रस्तुत काव्य में "दूती वचन नायकसों" और 'नायक-वचन दूतीसों" बहुत सामान्य कोटि के हैं। इस प्रकार के छन्दों में बहुज्ञता प्रदर्शन और नाम गिनाने की प्रवृत्ति से काव्य

का भाव-पक्ष सर्वथा गौण हो गया है। निम्नलिखित छन्दों में पेड़-पौधों और पक्षियों के नामों की ही भरमार है —

"चवेली चंपा घनसार आव।
लसें सेवती मोगरा ओ गुलाब॥
धौ केतकी केवरा दाष अनार।
हैं केल जुही बकुला विसतार॥२८
मांकंद सिर कदमावलि पंत।
बनें अति सोभा तमाल अनंत॥
यहे विधि कानन कालंदी तीर।
लता परसें जुत सुम्मन नीर॥२६
करें तहां केलि विहंग अपार।
चकोर मराल कपोल सुढार॥
परेवा सुचावक कोकिल कोर।
घनें चकवा सुक सारिका मोर॥३०"

सम्बन्धित छन्दों में दूति प्रथम नायिका के समक्ष नायक की प्रशंसा करती है और फिर नायक के समक्ष नायिका का विस्तृत वखान करती है। इस प्रकार राधा-कृष्ण ऐसे राजा-रानी हो गये हैं जिनका प्रेम-भाव "वकालत" पर ही आधारित होता है। राधा की प्राप्ति के उपरान्त कृष्ण दूति को राजसीप्रथा के अनुसार उस दिन की "रीझ" भी देना नहीं चूकते—

"तोहि आजुकी रीझ, रतन द्रव देहुं वधाई।
पीथल सरस सुदेस, सु यह भामिन मन भाई॥"

राधा-कृष्ण का सुरति वर्णन और सुरतांत वर्णन अन्य शृङ्गारी कवियों की भांति अत्यन्त सामान्य कोटि का हुआ है। भाव-सौन्दर्य के अभाव में सम्बन्धित वर्णन केवल रूढ़ि पालन ही दिखाई देता है। तदुपरान्त "नायकाके द्रगनको वर्णन" अत्यन्त कलापूर्ण हुआ है—

"कंजन पंजन गंजके, मृगन द्रगन करि मात।
झंषियां छवि रपियां नहीं, तो अंपियां सरसात॥७४

या भावको कवित्त

कारे कजरारे प्यारे तीपे अनियारे भारे।
पीथल सुढारे सब दुपनके भंज हैं॥
डारे रंग राते मैंन मदहूके माते सुप।
सोभा सरसाते गांन सोतिनके गंज हैं॥
ऐंन मीन सारस ओ मदिर निरपि नेंन।
यहे गति लेत कवि प्यारे मन रंज हैं॥
कुरंग कुरंग होत झपहिं लगत झप।
अंवुज ह्वै अंवु अरु पंजन ह्वै पंज हैं॥७५"

फिर दूती द्वारा दिये गये एक अन्य बाला के परिचय से कृष्ण की दूसरी लीला का वर्णन प्रारंभ होता है। दूती कहती है—

"देप आई लाल एक व्रजमें रसाल बाल।
जात जमुनाके जल धरें सीस गागरी॥
निपट नवीन लसें पीथल प्रवीन तन।
अतिही अनूप रंग सागर हे नागरी॥
कहत वनें न कछु आंनन उदोत छबि।
ससितें सरस बहु रूपकी उजागरी॥
मोहनकी बात मनमोहन व्हे मोहनीकों।
चलो तो दिपाऊं आज अेत गुंन आगरी॥८०"

आगे के छन्दों में नायिकाओं की विभिन्न स्थितियों का शास्त्रीय रीति से विशद वर्णन किया गया है। रासक्रीड़ा, झूला, वसन्त, होली, चीर-हरण, जलक्रीड़ा, ग्रीष्म-वर्णन, दानलीला, गौ-धूलिका समय आदि वर्णन के अन्तर्गत प्रस्तुत काव्य में सरस छन्दों का समावेश हुआ है। तदुपरान्त खण्डिता वर्णन, मान-वर्णन, प्रोषित-पतिका वर्णन और वर्षा-वर्णन हुआ है जिसमें सम्बन्धित काव्य-शैली का सफल निरूपण किया गया है।

ग्रन्थ के अन्त में नाम-वर्णन, रूप-वर्णन और ध्यान-वर्णन के अन्तर्गत शृंगार के अतिरिक्त शान्त-रस का भी सफल निरूपण हुआ है। इन छन्दों में कवि की भक्ति-भावना निहित है।

कृष्ण-लीलाओं के वर्णन में कवि की रूढ़िवादिता के दर्शन होते हैं किन्तु भक्ति-सम्बन्धी छन्दों में कवि के मौलिक भावों का सरस निरूपण हुआ है। इन छन्दों से ज्ञात होता है कि कविवर पीथल शृंगार के साथ ही शान्त-रस निरूपण में भी परम दक्ष थे।

कवि पथिल विरचित "जुगल-विलास" नामक काव्य ग्रन्थ के विषय में कोई विशेष जानकारी किसी इतिहास-ग्रन्थ में नहीं प्राप्त होती है। केवल एक ग्रन्थ में निम्नलिखित सूचना प्राप्त होती है—

"पीथल, नि० का० सं० १८०० (?) ग्र० जुगल विलास वि० मानसिंह के पुत्र"[1]

प्रस्तुत टिप्पणी से यही ज्ञात होता है कि मानसिंह के पुत्र पीथल ने संभवतः वि० सं० १८०० के आसपास जुगल विलास नामक ग्रन्थ की रचना की।

"जुगल-विलास" में काव्य-प्रेणता का "पीथल" नाम ही ज्ञात होता है। साथ ही काव्य-शैली और भाषा में प्रयुक्त विशेष शब्द-प्रयोगों तथा वर्णन शैली से काव्य प्रणेता का राजस्थानी होना भी ज्ञात होता है। यह अवश्य ही स्पष्ट है कि जुगल-विलास के कर्ता पीथल से बीकानेर के सुप्रसिद्ध राजस्थानी कवि महाराज पृथ्वीराज अपरनाम

[1] राजस्थान का पिंगल साहित्य, डा० मेनारिया, प्रकाशक हितैषी पुस्तक भण्डार, उदयपुर पृ० १७१।

पीथल सर्वथा भिन्न हैं। वि० सं० १८०० के आसपास जुगल-विलास की रचना करनेवाले मानसिंह सुत कविवर पीथल हमारी खोज का विषय बने हुए हैं। प्रस्तुत काव्य की तीन प्रतियां प्राप्त हुई हैं। पहली रावतसर की प्रति से मूल पाठ अविकल रूप में दिया गया है और दूसरी देवगढ़ प्रति से पाठान्तर प्रस्तुत किये गये हैं। तीसरी प्रति श्री अगरचन्द नाहटा के सौजन्य से आचार्य शाखा भण्डार बीकानेर की प्राप्त हुई है। यों यह प्रति अपूर्ण ज्ञात होती है क्योंकि इसमें केवल ७६ छन्द हैं और अन्य प्रतियों में २०२ छन्द प्राप्त होते हैं। फिर भी यह प्रति कर्तानाम, स्थान और समय निर्धारण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इस प्रति के प्रारम्भ में ही लिखा है—"अथ जुगल-विलास महाराज श्री प्रथीसिंघजी कृत लिख्यते।"

प्रति के अन्त में लिखा है—

दोहा

राधा नन्दकुमारको, सुमरण करि दिन रैंन।
तातैं संकट सब हरै, चित उपजै अति चैंन ॥ ७५

सुरतरु नभ वसु ससि बरस भादौं सुदि तिथि मार।
पूरन युगल-विलास किय, श्रीय युत सुर गुरवार ॥ ७६

इति श्री युगल-विलास ग्रंथ महाराधाधिराज प्रथीसिंघजी कृत संपूर्ण। संवत १८४६ मिति माह शुक्ल एकादश्यां तिथौ लिखितं। पं० अमरविलासेन श्री कुशलगढ़ मध्ये। श्री जिनकुशलसूरिजी प्रसादात ॥ श्री ॥"

इस प्रकार स्पष्ट है कि "जुगल-विलास" काव्य की रचना महाराज पृथ्वीसिंहजी अपरनाम पीथल, कुशलगढ़ नरेश ने वि० सं० १८०१ में भाद्रपद शुक्ला १३ गुरुवार को पूर्ण की। कुशलगढ़ राजस्थान की एक भूतपूर्व छोटी रियासत रही है।

राजस्थान में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी और खड़ी बोली के अतिरिक्त व्रजभाषा में भी प्रचुर मात्रा में साहित्य का निर्माण हुआ है। व्रजभाषा के हजारों ही ग्रन्थ राजस्थान में यत्र-तत्र बिखरे हुए हैं जिनके प्रकाशन की ओर अभी तक किसी का विशेष ध्यान आकर्षित नहीं हुआ है। व्रजभाषा साहित्य को राजस्थान की देन के रूप में 'बिहारी सतसई' के पश्चात् दूसरी महत्त्वपूर्ण कृति "जुगल विलास" मानी जावेगी। इस ग्रन्थ-रत्न के प्रकाशन का श्रेय राजस्थान सरकार द्वारा स्थापित राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर के संमान्य सञ्चालक, आदरणीय, साधुमना मुनि श्री जिनविजयजी को है जिनकी प्रेरणा से मैंने राजस्थानी भाषा में नवीन साहित्य-निर्माण के साथ ही प्राचीन साहित्य के सम्पादन का कार्य भी हाथ में लिया है। अतएव मैं श्रद्धेय श्री मुनिजी महाराज के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूं।

लक्ष्मीनिवास कोटेज,
बनी पार्क, जयपुर
श्रावणी तीज, २०१५ वि० सं०

लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत

कवि पीथल विरचित

जुगल विलास

दोहा

सुचि रुचि मन वच करमसों, जप तूं जदुपति जीय।
प्रभुको नांव पिऊष रस, पीथल निति प्रति प्रीय ॥१

श्रीसरसुति गनपति सदा, दीजे बुधि बहु ग्यांन।
कर जोरें विनती करों, सिर नाऊँ धरि ध्यांन ॥२

नंदलाल व्रषभानुजा, व्रज कीने रस रास।
बुधि माफिक वरनों वहै, जाहर जुगल-विलास ॥३

जुगल जोर सोहत सरस, सज्यो सरस सिंगार।
गुंजमाल गोपालकें, राधाके उर हार ॥४

मोहन मुरली मधुर सुर, करत राग रस ग्रैंन।
दुलहनिके छबि देत हैं, घूंघट पटमें नैन ॥५

झीनें पटमें मुष दियें, सोहत सरस सुहाग।
मोहन राधे देषि कें, रहै ठगोरी लाग ॥६

निरत करत व्रजकुंजमें, लिये दुहूं गर बांह।
मानो दीपत दामिनो, घन सांवनके मांह ॥७

अरस परस निरषत दुहूं, मुसकत द्रगन मरोर।
ता छिनकी छबि देषि कें, वारौं रतपति कोर ॥८

बहुत छवी ब्रषभानुजा, नीके नंद कुवाँर ।
केहर मांन पीथल प्रभू, जोरो पर बलिहार ।।६

अथ छंद त्रभंगी

बनमें बनवारी भांनदुलारी आंनदकारी अधिकारी ।
दोउ नेह बढावें रँग उपजावें मिल सुष पावें वोह भारी ।।
जुग वसे परसपर थिर उर अंतर राधे गिरधर जू सुषदा ।
सुभ रूप धरें तनमें न भरें रस रास करें ब्रज मांह सदा ।।१०

दोहा

देषत मदन गुपालकों, बिसरें तन सुधि बाल ।
बाल विलोक रसाल अति, मन ललचावें लाल ।।११

परस्परानुराग

कवित्त

देषत छैल गुपाल मनोहर, बाल रसाल सुधें बिसरावें ।
बेटी विलोकत ही ब्रषभानुकी, लाल महा चितमें ललचावें ।।
पीथल दोऊ यों आपुसमें रस–रीति हिये धरि नेह बढावें ।
भांवतीके मन भांवतो भांवत, भांवती भांवतेके मन भावे ।।१२

दोऊ विराजत रूप उजागर, नागरि नागर नेह बढावन ।
वा बिन वा कल नांहि परें, अरु वा बिन वा पल नांहि सुहावन ।।
पीथल बाल गुपालनजी करहें, नित कांम कटाछ उपावन ।
भांवनकों मनभांवन भांवन, भांवन हैं मनभांवन भाँवन ।।१३

कवित्त

लाडलेके लाड सदा लाडली जु लसें जैसें ।
लाडलीके लाड सदा लाडलो महा लसें ।।

रंगीलेके रंग अंग रंगीलीको रसे जैसें ।
रंगीलीको रंग अंग रंगीलो लिये रसे ॥
मोहनको देषि, मृदु, मोहिनी यों हँसे जैसें ।
मोहनीको देषि, मृदु मोहन हू यों हँसे ॥
प्रानहींते प्यारो, प्यारो, प्यारी मन बसे जैसे ।
प्रानहीतें प्यारी, प्यारी, प्यारे मनमें वसे ॥१४

[सवैया]

सुंदर बाल सुजान पिया इक आसन रूप लसैं छबि होती ।
ता छिन कामिन कंतके चुंबन नीके करें अति ही रस सोती ॥
आइ जुरे नथसों जलजातरु आपुसमें उरमें ससिगोती ।
नाह सुधारत नारिकी वेसरि नारि सुधारत नाहको मोती ॥१५

अथ नायकाको श्रृंगारवर्णन

कवित्त

वहुतें सुगंध डारि मंजन सु वाम कीनो ।
अंजन दे नैन छबि षंजनकी छलें हैं ॥
सजि के सिंगार चारु चँदनकी षोरि किये ।
आनन है इंदु सम सोहैं दुति भले हैं ॥
शुककी सी नासा तामें बानिक वुलाक बनी ।
कंचनकी करी बीच मोती नीके हले हैं ।
ताही छिन पीथल यों वहे रूप राजत है ।
मानुहुँ असुर गुरुचंद मधि चलें हैं ॥१६

[सवैया]

पियको सुष देन मयंकमुषी वहु गंधनसों करि मंजनको ।
पुनि नोसत साजसिंगार सवैं अति लालनके मन रंजनकों ॥
करकी छगुनी महदी छबिसों लषि नैन लगावत अंजनकों ।
वह रूप विराजत पीथल यों मनुं गुंज चुगावत पंजनकों ॥१७

सब साज सिंगार अनूपमता व्रषभान सुता छवि ता पलमें ।
बहु सोभित पीथल रूप भरयो अति मोतिनको हरवा गलमें ।
तिहि वीच विराजत हे दुलरी दुति मानिककी सुगला गलमें ।
भुवको सुत मानौं करे रस सो यह मंजन भोंम गंगाजलमें ।।१८

सोरे सिंगार सजी सब सुंदर भूषनकी छवि जोर छई है ।
नैनन देषि कुरंग लजें गति देषि मराल सुवुधि गइ है ।।
भाल सिंदूरकी वेंदी विराजत पीथल यों उपमां जु भई है ।
पीत करी मनो कामिनसो पिय इंदुवधू बिधु अंक लई है ।।१९

अति साज सिंगार सवैं व्रषभान सुता छवि ता कहु ता पलकी ।
वहु दीपत है दुति आननकी, दुजराजहुतें सरसें झलकी ।।
कुचके ढिग मोतिनको हरवा गलसों छवि पीथल यों गलकी ।
मनु कंचनके गिर द्वे विच ह्वै यह गंग तरंगनसों षलीकी ।।२०

अथ दूती वचन नायकसों

षरी वनिता बनि बानिकसों तिहि देषत हौं मुरझाइ परी ।
परी लषि ता केउ कोटिक बारों लसे तन अंबर सेत जरी ।।
जरी नहिं चाहत सो तिय पेषि हियें छविसों मुकतांन लरी ।
लरी मे मन मोहन यों तुमसों तुम मानत नाय यह बात षरी ।।२१

[कवित्त]

वाढी नववाला नंद लाला वनि वानिकतें ।
चितें अति रावरेई दरसकी बात है ।।
ओढें नील अंवर ओ नोसत सिंगार सजे ।
पीथल प्रबीन तन स्वर्ण कांत हैं ।।
आनन अमल अरु विहसत मंद वाम ।
दसन दिपत स्याम सोभा इहि भांत है ।।
मानों हरे पात लपटानें चहु ओर ।
आछे सुम्मन सरोज बीच मधुवन पांत है ।।२२

अथ नायक वचन दूतीसों

आइ के वषान अेते कीने हैं सुवामके सु ।
जेते सब सुनें सुनि नीके हम कांन दे ।।
जबतें बसी है उर माधुरी वा मोहनी की ।
अटक्यो उतेई चित्त, अोर काम जान दें ।।
जातें अब जाइ तूं बढाइ नेह वातनसों ।
पीथल अनेक मनुहार करि मान दे ।।
लगें मोहि प्यारी जो मिलावे वह प्यारी ।
अति होत है अवेर कर गोंन वेग आन दे ।।२३

दूती नायकसों यह विनती करके नायकापें चली

[दोहा]

यह कहि चली जु सहचरी, आई भामिन पास ।
अति हितचित गति लालकी, यापें करत प्रकास ।।२४

[कवित्त]

वैठे बलवीर बन, मदन मदन बन ।
सदन तिहारे को, पठाई मो नीहारिये ।।
कीजे सुष गोन उहां नीको रस कुंज भोंन ।
प्यारी अो विहारी मिल आनंद वधारिये ।।
कहत हौं, देवें सब, मैं तो अब चलौं नांहि ।
पीथल प्रवीन अेसी मनमें न धारिये ।।
.................................।
.................................।।२५

[छंद मुक्तादाम]

तिया बहु वानिक रूप निधान ।
कहौं सु सुनों चित दे इत कान ।।
पठांइ मुरार सुनारि तो लैंन ।
महा मनुहार कहे मुष बैंन ।।२६

ब्रंदावन चंद बैठे बन आय ।
कहों उपमां अब ताकी बनाय ।।
रचे रस ता बिच क्यारी अनूप ।
सुमांह फबे फुलबाद सरूप ।।२७

चवेली चंपा घनसार आब ।
लसें सेवती मोगरा ओ गुलाब ।।
धौ केतकी केवरा दाष अनार ।
हैं केल जुही बकुला विसतार ।।२८

माकंद सिर कदमावलि पंत ।
बनें अति सोभा तमाल अनंत ।।
यहे विधि कानन कालंदी तीर ।
लता परसें जुत सुम्मन नीर ।।२९

करें तहां केलि बिहंग अपार ।
चकोर मराल कपोत सुटार ।।
परेवा सुचावक कोकिल कोर ।
घनें चकवा सुक सारिका मोर ।।३०

वा कुंजके मांहि सुन्हेरीय धाम ।
बिछौंना सुछात जरी कस काम ।।
पनां पुखराज लगे हैं दिवाल ।
सु हीरकनी मनि नील ओ लाल ।।३१

सजी रस सेज कुसम्मन साज।
छके चंचरीट सुगंधिसों आज ॥
वन्यो अंगना जल पूरित होज।
फुले अरविंद छुटे नल मोज ॥३२

करें केऊ गाइ नचाइन राग।
सुनेतें स्रवन वढे अनुराग ॥
जहां मनमोहन रूप रसाल।
मुकट्ट मयूर तिलक्क हैं भाल ॥३३

दिपें जुग कुंडल नैन विसाल।
सुधामय बेंनही मोतिन माल ॥
सुवास सुडंबर अंबर पीत।
धरी मुरली करसों रस रीत ॥३४

यों राजें सुरंग भरे ब्रजराज ।
लषें छवि वारों किते रतिराज ॥
उहां चलीये, अब नारि नवीन ।
करो मिलि केलि सु दोऊ प्रवीन ॥३५

विलोकि विहार महा सुष देंन।
वढाओ उमंग तरंगन मेन ॥
कहौं तुमसों मैं यहै निरधार ।
पिया पिय भेंटन साजो सिंगार ॥३६

[कुण्डलिया]

मानी सिगरी बात मैं, तैं जु कही निरधार।
अब चलि हौं घनश्यामपें, साजौं सब सिंगार ॥
साजौं सब सिंगार, रसिक मोहनके कारन।
हियें वटाँवन चैन, विरह संतापहिं मारन ॥

प्यारेजूकी पीति सरस संदेसनि जानी ।
पीथल हितकी रीत समज अपुनें मन मानी ।।३७

[कवित्त]

कीनौं अंग मंजन औ, अंजन लगाइ नैन ।
प्यारे मन रंजनको, भामिन बनी भली ।।
बेनी छवी भारी गुही सारी जरतारी ।
सीस कंचुकी सवारी चित भेंटन हरी रली ।।
टीको सुभ दियो भाल, हियें मुकतांन माल ।
ऐसी सजिकैं रसाल चंपेकी मनों कली ।।
पीथल संदेस सुनि मोहनुको मोहनी यों ।
कुंज धामको अनूप, चातुर तिया चली ।।३८

अथ सुक्लाभिसारिका लिष्यते

चांदिनीमें चंदमुषी चली व्रज–चंद पास ।
जुवती समूहकों सु जनाँवन नांहिको ।।
सेत चीर मोती माल, कंकन जटित ।
हीर हीरनके वाजूबंध बांधे सुभ वांहिको ।।
लषि हैं सषि न पीछे पेषें प्रतिबिंब भूमि ।
पीथल करत गोंन आनी मन मांहिको ।।
आनन उदोत ठान आलिन दुराव काजें ।
फेरि फेरि नारि देषें निज छांहिको ।।३९

अन्यच्च

मोतिनकी माल तामें चंद दियें मोतिनमें ।
वेसरिके मोती तामें चंद छबि ले चली ।।
नोषे हैं तरोंनां तामें चंद लसें नगनमें ।
सीस फूल मनी तामें चंद जोति ज्वे चली ।।

चंदनकी षोरि किये चंपकलीके सु हार ।
ताहीमें झलक अति चंदके सी च्वे चली ।।
चंदके उदित नंद नंदन पे पीथल यों ।
चांदिनीमें चंदमुषी नेक चंद व्हे चली ।।४०

अथ दूती वचन नायकसों

कवित्त

रूपकी उजारी प्यारी मानों विधि संचे ढारी ।
मारुत परस बपु सरस डुलत है ।।
आनन कलानिधिसो आवें दल कोक नद ।
भालपें जराइ टीको सुन्दर षुलत है ।।
सुघट पयोधर औ कोबिद निपट बांम ।
पीथल विलोकें याके चित्त सुफुलत है ।।
ल्याई हों रसीले लाल सलोनी मैं बाल देषो ।
चारु सुकुमार भार फूलन तुलत हैं ।।४१

अथ छदं मुत्तियदांम लिष्यते

मैं ल्याई कन्हाई सलोनी सु बाल ।
लषो अति राजत रूप रसाल ।।
प्रथम वषानों मनोहर अंग ।
मनो कलधूत लता है सुरंग ।।४२

गुही कबरी छवि सोहै सुढार ।
मनो फनिराज भर्यो अहकार ।।
तरोना सुदेस दियें इम जोर ।
मनो दुजराजके भान दु ओर ।।४३

विराजत मोतिन मांग सुभांत ।
मनो निसी कारी उदग्गन पांत ।।

फबे तिय आनन आनंद कंद ।
मनों जुत अमृत पूरन चंद ।।४४

सुभालपे टीको पनांके जराय ।
मनों ससि अंकमें बुद्ध जनाय ।।
सुभोहन बनाव वेने इहिं रूप ।
मनो सुर चाप द्वे भास अनूप ।।४५

लसें बहु सुंदर सुंदर नैन ।
मनों जुग षंजन चंचल अैन ।।
महा दुति नासा कहौं गति जोय ।
मनों रजनी मुष दीपक लोय ।।४६

विलोकित बेसरि होत अनंद ।
मनों मन मोहनको यह फंद ।।
रुचें रद्दन छद हद्द गुपाल ।
मनों रँग राते सुराजें प्रबाल ।।४७

बनी दंत सांवरे चोंपन जोत ।
मनों घनस्यांम कोंधांन उदोत ।।
हँसे रवनी रससों मँद हास ।
मनों निसि राका मयंक उजास ।।४८

यों होत हैं चैन सुनें मुष बान ।
मनों करैं कान पीऊषको पांन ।।
चिबुक्क सु बिंदु लगी इंहि भाय ।
मनों अलि बाल पर्‌यो विधु पाय ।।४९

ग्रीवा सुथरी यह अैसे अकार ।
मनों सुभ कंबु त्रि रेषहि धार ।।
छरा पुंज पोति सु आछें सुहाय ।
मनो ए सिंगार सरीर बनाय ।।५०

पयोधर सोभा सु या बिधि होय ।
मनो कमला फल हेमके दोय ।।
हियें मुकता फल उज्जल हार ।
मनो सरदी रित गंगकी धार ।।५१

किसोरीकी बांह बनी बहु चारि ।
मनो यह नीकी चंपेकी हू डारि ।
दोऊ कर श्रोपे स भूषन लाल ।
मनों मृदु मंजुल कंजु सनाल ।।५२

उदर समान नहीं कोऊ श्रान ।
मनो यह नागरबेलको पान ।।
छबीलोकी नाभ छजें यह नूर ।
मनो रस कूप भरचो सुचि पूर ।।५३

लिये उपमां कटि श्रेसी सुहात ।
मनों रतिराजको छाजत गात ।।
जंघा जुग रोचत भांति यों लीन्ह ।
मनों रँग षंभ सुन्हेरीय कीन्ह ।।५४

सुभूषित हैं पद श्रैसे सुढंग ।
मनों पंच सायकके दुनि षंग ।।
लिन्हें श्रँगुरी नष यों व्रज इंदु ।
मनों दल पंकजमें जल विंदु ।।५५

धरे गति गोंन श्रभें नंद श्रा [ला] ल ।
मनों मगु उर चले हें मराल ।।
सारी जर तारीय भारीय सीस ।
कंचू लहेंगा बिसवासो हें वीस ।।५६

सुडंबर हे वपु केऊ सु वास ।
यातें श्रलि व्रंदजुके चहुं पास ।।

न होते या बांमकी ओर न होर ।
नौछावर यापें करौं रति कोर ।।५७

करो अब पीथल केलि मुरारि ।
सुनायक स्याम यह तिसु नारि ।।
अंग भास उजास सुवास लियें ।
..........................।।५८

अथ नायक वचन दूतीसों

कुंडलियो

भाई मो मन तूं अधिक, ल्यावत ही यह बाल ।
अति चितकों आनंद बढ्यो, देषत रूप रसाल ।।
देषत रूप रसाल, द्रगन सुष बहुतें पायो ।
अनंत हरष जिय माही अँनग रँग नेह बढ़ायो ।।
तोहि आजुकी रीझ, रतन द्रव देहुं बधाई ।
पीथल सरस सुदेस, सु यह भामिन मन भाई ।।५६

अथ परस्परा विलोकन

दोहा

कुंज भवन पिय भामिनी, करत जुगल मिलि बात ।
अंग अनँग तरंगतें, होत द्रगन द्रग घात ।।६०

अथ नायका विलोकिन नायककों

[सवैया]

चंचल चारु चषें चतुराकी चितें सफरी न फरी भई होरन ।
वंकी विलोकन वानिकतें वहु रोचत हें रंग रातो सु डोरन ।।
पीथल पीतिकी रीति लियें हरि चातुरको चित चाहत चोरन ।
वाल विलोचन लाल लषें मद मेंन भरी करें हद्द मरोरन ।।६१

अथ नायक विलोकिन नायकाकों

माते मनों मदिरा मदतें रंगराते अनूपु अनूप लियें ।
गति मेंन सनी करें सेंन सुनेंनसों चंचलताकी छवीली छजों छति ।।
पीथल लाल गुपालकी आवें सुवाल लषें इहिं भांति भई रति ।
प्यारीको आनन पेषि मयंक चकोर ज्यों नैन छके हरिके अति ।।६२

अथ सुरतागम लिष्यते

अति आनंदके सुषको करिवो मन मोहनजू चित मांहि चह्यो ।
रससों कुच राधिकको तबही करसों हरिजू तिंहि वेर गह्यो ।।
मुंदरी छवि देत सु सुंदरता यह रूप सु पीथल यों उनह्यो ।
मंन मंडित सीस अनूपमता सिवपे फनि राषि फनिंद रह्यो ।।६३

अथ सुरति वर्णनं लिष्यते

[कवित्त]

जांवूनद भोंन तामें तासके विछोना बने ।
हीर पनां मानिक ओ नील मनी जरी है ।।
बाजत अनूप छात भारी जरतारी काम ।
झालर सुढारी लसु मोतिनको लरी है ।।
गाइन करत राग डंबर सुगंधिनकी ।
पीथल प्रवीन दोऊ चितें पीति धरी है ।।
पलका पोहपस ज्यों स्यामां अरु स्यांम ।
रसमोद भरे केलि करें झरें रंग झरी है ।।६४

अन्यच्च

[सवैया]

पीतमसों रस रंग भरी रति केलि समें रस रूप उपावत ।
चांदिनी रेंनि महासुष देंन लगें नहि नैन सु नेह बढावत ।।
इंदु ठरचो सिरतें तिय जानि उपावहि यें हित सो उपजावत ।
अेन चलें न हलें यह चंद यों मीन विलोचनि बींन बजावत ।।६५

अथ सुरतांत वर्णनं लिष्यते

पीतमसों रति मानि उठी तिय, सुंदर मंदिर मांहि परी है।
सोभित हैं अलकें विथुरी छतियां उघरी अति रूप धरी है।।
लालके दंत लगे मुषपें छवि ता रसरंग ललाइ भरी है।
पीथल यों उपमा वह राजत चंदमें मानों चुंनीसी जरी है।।६६

अथ लष्यिता वर्णनं

[कवित्त]

आली वनमालीसों पुसालीजुत मानो रति।
जानी हम नीकें करे सोह क्यों घनेरे यों।।
माला मुरकांनी दरकांनी अंगिया अनूंप।
सोंहें तरकांनी तनी अेसी गति हेरे यों।।
काहेकों दुराइ घाव वातन बनावे वीर।
पीथल प्रसिद्ध दसा चुभी चित्त मेरे यों।।
नेंनां अरसांने सरसांनें बरसांने रंग।
प्यारे परसांनें दरसांनें लषि तेरे यों।।६७

अथ नायकाको रूप वर्णनं

वामें हें कलंक यामें नेंक ही कलंक नांहि।
वाकों गहे राह याकों नांहिं कहुं घेरो है।।
वामें यह कांनि जांनि घटे वढें तिथों तिथ।
याकी दुति जोर सदा पीथल उजेरो है।।
दीपें निसि जोत वाकी याकी निसि व्हासुर है।
याकी समता न वहे याको वह चेरो है।।
राधे यह रीति देषि कीजत वपांन कहा।
इंदु हूतें वपत विलंद मुष तेरो है।।६८

एक दिनां मावसकी रेंनि समें भानुसुता।
नोसत सिंगार साज सांवरो भेटचो चहें।।

ता छिनमें अंग छवि छाजत है उज्जलता ।
चंद्रिका प्रकास भयो तातें रसकों गहें ।।
लागत हे अेसी तबें पीथल प्रसिद्ध बात ।
इंदु विन उद्यत सकल जगमें कहें ।।
राधिकाके मुष दुति कुहू निसि भई ।
राका छपाकर यातें मुष छिपा करकें रहैं ।।६९

चंदसो न कहूं मुष वामें तो कलंक होत ।
को सेन कहूं कर निसाकुं भिलात है ।।
मीनसे न कहूं नेंन जालके परत फंद ।
कीर मीन कहूं नासा बनमें वसात है ।।
वीजुरी न कहूं देह दीप दुरजात देषो ।
गजसी न कहूं गति अांकुसकी वात है ।।
राधे यह रति देषि पीथल विचार कियें ।
तेरो अंग तेरो अंग जैसो सरसात है ।।७०

नासा हे सरूप सुनि अांनन अनूप रूप ।
दीपत दसन नीकें अधर सु यों फवें ।।
राजत पीथल दू लोचन सरस अेसे ।
तेसी गति गोंन कियें सोभित महा फबे ।।
कीर अो दुजे सदा रचो विद्रुम झषें मराल ।
यह भांति होत राधे देषें छबि तो तवे ।।
वन जात घटि जात फटि जात रंग जात ।
छिपि जात थकि जात एक ही समें सवें ।।७१

[सवैया]

सुदंर भालपें वेंदी मृगमद अो घनसारकी षोर सुहाई ।
अंग लग्यो अंगराग अनूप मुषें मुष रागधों अोप वढ़ाई ।।
तेरो में रूप कहा वरनों छबि पीथल मोहनके मनभाई ।
तो द्रग देषन देत हैं भाँवरी तें जु करे वस अेसे कन्हाई ।।७२

अथ नायकाको मुष वर्णनं । दूती वचन नायकसे कहै ।

[कवित्त]

मोतिन गुही मांग भालपें जराइ टीको ।
चषनके देषेंसों भषनकी अदन है ।।
राजत तरोंना तामें हीरनकी दीपें दुति ।
नासिकाके लषें नासा कीरकी हदन है ।।
पोथल सरस तेसो वेसरि अनूप बनी ।
दारचोंतें अधिक छवि रोचत रदन है ।।
दुषको कदन उपजावन मदन अति ।
प्लारीको बदन स्यांम सुषको सदन है ।।७३

अथ नायकाके द्रगनको वर्णन

दोहा

कंजन षंजन गंजके, मृगन द्रगन करि मात ।
भषियां छवि रषियां नहीं, तो अंषियां सरसात ।।७४

या भावको कवित्त

कारे कजरारे प्यारे तीषे अनियारे भारे ।
पीथल सुढारे सव दुषनके भंज हें ।।
डारे रंग राते मेंन मदहूके माते सुष ।
सोभा सरसाते मांन सोतिनके गंज हें ।।
ऐंन मीन सारस औ मदिर निरषि नेंन ।
यहे गति लेत कति प्यारे मन रंज हें ।।
कुरंग कु रंग होत भषहिं लगत भष ।
अंबुज व्हे अंबु अरु षंजन व्हे षंज हें ।।७५

अथ नेंन मेंन सेंन सम वर्णनं

डोरे षोल कर पंकज कुसुम सम ।
बूंद महदीकी तामें लाल रंग भरचो हे ।।

मूंदरि विविध विधि पुंहची सु प्यारी भांति।
कंकन पेंजेबसों जराइ नीको जरचो है ।।
चूरी सो सुहाग पूरी पूरो छबि लियें लार।
पीथल मनोहरको देषें मन हरचो है ।।
ओर तेरी अंग सोभा कहां लों बनाय कहों।
चित व्रजराजजूको हाथ हाथ करचो है ।।७६

अथ नायकाके वपांन वर्णनं। दूतीवचन नायकासों

व्याल केसी बेनी मृगनेंनी मृदु बेनी बांम।
सोहें सुष चेंनी रंग देंनी व्रजराजकों ।।
रतन तरोंनां अरु नासा अरविंद गंधि।
आंननके जोरें एक दीजे दुजराजकों ।।
भोहें सुरचाप लसें दारचों सी दसन दुति।
कटि सम पीथल कहत मृगराजकों ।।
देषी हें गुपाल एक बाल में रसाल आज।
तापें नोछाहर करि डारों रतिराजकों ।।७७

अन्यच्च

नीकें घनस्याम सुनों वामकी विमल सोभा।
अहीसी अनूप बनी वांनिकतें बेंनी अति ।।
सुघरि सुनारि सुधाधर सो सुछ।
विमुष सुषयु सुरूप हेम ओपें मृगनेंनी अति ।।
नेंन बांन नात्रक से पीथल पिऊष पगे।
हरिको मिलेंते मन आछें हर लेनी अति ।।
असी में बिलोकी बाल चलीए रसिक लाल।
वेर वेर कहत हों देषो सुष देंनी अति ।।७८

अन्यच्च

बाल अलवेली अरु जोवन नवेली लाल।
धातवति लता तन सोभित सुढारी जू ।।

अति थहरात ताको अनिल परस अंग ।
असी सुकुमारि लसें नेंना रस कारी जू ।।
चितई चतुर स्यांम चतुरा में आजु नीकी ।
झूठी जो कहत सोंह तिहारी बिहारी जू ।।
सुधामद मतवारी पीथल सरूप भारी ।
देषो वह नारी तो चलो गिरधारी जू ।।७९

अन्यच्च

देख आई लाल एक व्रजमें रसाल बाल ।
जात जमुनांके जल धरें सीस गागरी ।।
निपट नवीन लसें पीथल प्रवोन तन ।
अतिही अनूप रंग सागर हे नागरी ।।
कहत वनें न कछु आंनन उदोत छबि ।
ससितें सरस बहु रूपकी उजागरी ।।
मोहनकी बात मनमोहन व्है मोहनीकों ।
चलो तो दिषांउ आजु अैते गुंन आगरी ।।८०

अथ नायकके नायकाकी चितवन चित्तोंनको अभिलाष

ले अपुने गृहतें सिर गागरी नागरी पांनीकों चाली सवेरी ।
जात हती व्रजपोरिनमें जहाँ पीवतें आइ मनोहर घेरी ।।
बालसों लाल कह्यो सुनि बात यो पीथल पीछे चिते तिय हेरो ।
चोघनि तेरी चुभी चितमें अब फेरि लषों घिरि देषन तेरी ।।८१

अथ नायक नायेकाके परस्पर लगन

अथ नायक लगन

देषी हें रसाल एक बाल में विसाल नेंनी ।
ता दिनतें मेरो चित हर्यो चाप भोंहनी ।।
असी गति भई हे विलोकें बिन भांमिनके ।
बासुर विभावरी कहों न चेंन होंहनी ।।

तोकों हों कहत ताते पीथल बनाई बातें ।
जातें सुनि ग्राज मो मिलाइ नारि सोंहनी ।।
जंत्र हें ग्रनूप किधों तंत्र हें वा बाम पास ।
मोहनी पढचो हे किधों मोपें मंत्र मोंहनी ।।८२

ग्रथ नायका लगन

जा दिनतें भेंट भई नंदके कुंवरजूसो ।
ता दिनतें पीथल यों चितें चोर लियो है ।।
देषें बिन देषि मोकों कल न परत कहूं ।
पल न लगत रेंनि चेंन छांडि दियो है ।।
बिनती करत तोसों भटू यह काजें ग्राजु ।
मोंहन मिलाइ दे तो तेरो दियो जियो है ।।
कहा कहों बात मन बीतत हे घात तेसी ।
जादूंपति ग्राली मोहि जादू ग्रति कीयो है ।।८३

ग्रन्यच्च

भांषीतें लालकों भांषी तबें ।
सुधि भूलि परी न लषी किन तोऊ ।।
सासु ग्रो नंद जिठांनी कहें ।
समुभें यह रोग तिन्हें सब जोऊ ।।
पीथल ग्रेसो सुनें वह बोली यों ।
ग्रानों उन्हें जब ग्रानंद होऊ ।।
जांनत हें इक सांवरो वेदन ।
वेद न वैदन जानत कोऊ ।।८४

ग्रावेंगे संकेत उहि, वर नायक ब्रजराज ।
चतुर तिया ग्रब तुम चलो, भेंट होय है ग्राज ।।८५

ग्रावत ही सांभ सुष सनी ग्राई भांमिनके ।
मोहन मिलन बात सषी कही साहिये ।।

ताही छिन तज्यो भोंन कुंजकों करचो है गोंन ।
संग सहचरी चारु चातुर तिया लियें ।।
पीथल संकेत प्यारी पोहची न पाए पीय ।
भई अति व्याकुल यहे गतिकों लियें ।।
मोद मिट्यो मनको हुलास हटचो ।
तनको फटचो जु उरधनको विरह जाग्यो जियें ।।८६

दोहा

क्यों मलीन दुति हीन मुष, सुध ना रषत सरीर ।
अब बलवीर रहि ल्यायहों, धन धरिये चित धीर ।।८७

अथ संकेत सूनों लषि यह कहिकें नायकपें दूती पठाई

आई हों संकेत सांझ लाल तुम आए नाहिं ।
तातें छल असो मोसों करचो इहिं फेर है ।।
विरहा मगर अरु ज्वालमें लपटंतु ।
पीथल गुपालजूसों जाते यह टेर है ।।
कुंज भोंन ताल तामें मेंन छोल असें कहो ।
आई गही गोंठ हरी मोकों करी देर हे ।।
बूढत हों नेह रस रावरे मुरारि वारि ।
तारनकी वेर हमें तारनकी वेर हे ।।८८

अथ दूती वचन नायकसों

जेसें मारतंड विन रोचत राजीव नाहिं ।
जेसें बारि विन मीन धीर न धरत हें ।।
जेसें स्वांत बूंद विन चित न पपीह चेंन ।
जेसें उडईस विन चकोरी जरत हें ।
जेसें कुसुमाकर विन आंब न गुलाब अंग ।।
जेसें बिन वारिधि मराल हहरत हें ।
पीथल गुपाल चलों असें गति वेषि वापें ।
प्यारी बिन लाल जेसें कल न परत हें ।।८६

अथ स्यांम स्यांमाको संदेस सहचरीके सबदसों सुनिकें संचरे

सुंनत ही बेंन सहचरीके हरी सुदेस ।
जाही घरी धरी षरी सहितकी बात हिय ।।
स्यांमांको संदेस मनमोहनजू मान्यो मन ।
पीथल मिलन मतो ताही छिन ठान्यों जिय ।।
रंगकी तरंग अंग उमंग अनंग बढ्यो ।
भूषित सुभूषन सिंगार घनस्यांम किय ।।
असें बनवारी सुषकारी छबि भारी बनि ।
करचो जब गोंन प्यारी भेंटनकों प्यारे पिय ।।६०

अथ सहचरी स्यांमांको स्यांमके आंवनकी वधाई दे कर सिंगार सजिबेकी विंनती करी

ल्याई हों वधाई अब आवत कन्हाई तेरे ।
पीथल सुहाई अधिकाई छबि आज री ।।
मुकुट सुमाल धरें कुंडल द्रू पीरो पट ।
बांनिक बिलोकि केऊ वाँरों रतिराज री ।।
यातें अंग मंजनकें अंजन द्रगन देहु ।
कवरी सँवार चारु करो सुभ काज री ।।
चीर जरी वेसरि तरों नांटीको मांग हार ।
कंकन अंगुठी स्यांमां सजो सब साज री ।।६१

अथ स्यांमां वचन सहचरीसों

तू कहे आवत हे घनस्यांम सु ।
पीथल हों बलिहारी हों तेरे ।।
ओर कही सब साज सजो ।
सुभ साज तो आज भयो दिन हेरें ।।
चाह नंही गहनेंकी चितें ।
चित चाह सदा पियकी कहूं टेरें ।।

भूषन हें व्रज भूषन मो तन ।
भूषुनकी कछु भूष न मेरें ॥६२

अथ सहचरी वचन स्यांमांसों

प्यारी जू प्यारो हे प्यारो तुम्हे सब ।
सांचि कही वतियां मन भाई ॥
राजत हो अति रूप उजागरो ।
सो छवि नागरी भारी सुहाई ॥
पीथल पीति गुपालसों रूप सु ।
दोऊ हियें तुमपें अधिकाई ॥
ये सब नीकें सिंगार सजो यह ।
रीति सदामदसें चलि आई ॥६३

अथ स्यांम आवनके आगम स्योंमां सिंगार सज्यो ताको वर्णनं

सदन सिंगारिकें सिंगार सेज सुंम्मनसों ।
सुरँग सिंगार पुनि विछोनां सु छातकों ॥
कवरी सिंगार कच कंचुकी सिंगार हार ।
अंग राग अरच सिंगार गोरे गातकों ॥
पीथल विविध विधि सबही सिंगारसों जवे ।
सरि सिंगारकों सिंगार जल जातकों ॥
आजु व्रज़राजकों बढन रतिराज काज ।
स्यांमां जू सिंगार सज्यो मिलनकी रातकों ॥६४

अन्यच्च

अथ स्यांमां मग हेरत स्यांम आए ता वर्णनको दोहा

मग हेरत घनस्यांमांकी, स्यांम सजि सिंगार ।
तिंहि औसर आग्रे तुरत, मनुहर रसिक मुरार ॥६५

अथ छंद पद्धरी

अथ स्यांम आए लषि स्यांमां विंनती करत ताको वर्णन

लाल कृपा करि आए हो मेरें सुमोद वढ्यो वडभागिन हों ।
पीथल देषि निहाल भई व्रज जीवन मो तन जीवन हों ।।
प्यारे जू न्यारे करों न घरी अब और त्रियागृह जांन न हों ।
वेठहु सुंम्मन सेज सजी लषि हों अपुनें तपको फल हों ।।९६

अथ सुरति वर्णनं

चांदिनीमें चांदिनी पें चांदिनी बिछोनां तहां ।
चंदमुषी व्रजचंद पीति अति करी हें ।।
राजें कलधूत सेज मांनिक जटित पनां ।
तापरा रस रति रची छवि भरी हें ।।
पीथल मनोज मन बाढयो बहु दुहुनके ।
रंगकी तरंग अंग उमँग सुधरी हें ।।
प्यारे उर वसी प्यारी प्यारी उर वस्यो प्यारो ।
आपुसमें वसे उर नीकी सु घरी हें ।।९७

अथ रति अंत पिछली रेंनकी नायका नायकपें विदा मांगत है ताको वर्णनं

तीन जांम जांमिनो विंहांनी बिहारीलाल ।
भोर समो होय हें तो होय हे दबाव अति ।।
सासु नंद जिठांनी द्योरानी लरेंगी मोसों ।
या डरतें विसुरी हों सकल सरीर मति ।।
रावरे दरस तो अघात न नेंन मेरे ।
पीथल करोंब कहा आइ बनी यहे गति ।।
ठाढी कर ज़ोरिकें नवल सुजांन सुनों ।
मांनके अरज सीष दीजे सुष पाई पति ।।९८

अथ सुरतांत वर्णनं

दोहा

नष छत अति छत देत छवि, अधिक उरजपें आज ।
मनुं संकरके सीस यह, दिषत दूज दुजराज ।।९९

अन्यच्च वर्णनं

कवित्त

व्रज दूलहसों रति मांनि उठी ।
तिय राग अलापत हें षटमें ।।
अलसी पलकें विथुरी अलकें छवि ।
वैठी हें आलिनके थटमें ।।
कुचपें जु नखः छत रूप भर्यो ।
अति राजत हें पतरे पटमें ।।
यह पीथल कांम मनों सिवके ।
डर पेलत ले नवका घटमैं ।।१००

अथ लष्यिता वर्णनं

रची रंग आज व्रजराज सो मयंक मुषी ।
झूठी किंहि काज बीर बातन वनात हे ।।
हमे तो भयो हें सुष रूप यों अनूंप लषि ।
एते पर अेतो क्योंव अंतर अनात हे ।।
करत हे सोंह सो तो मानों नांहि मोको सोंह ।
तेरे कहे बैन बीर जीमें को ठनात हे ।।
तूटी उरमाल फटी कंचुकी रु छूटी तनी ।
पीतिकी सु रीति देषि जाहर जनात हे ।।१०१

अथ जुगल क्रीडाको करनेकों गये ताको वर्णनं

[सवैया]

कर ले लकुटी रससों बनमें गए मोहनकी दुति ता पलकी ।
गरबांहि लियें व्रषभानु सुता बहु वन्यो छवि ता छलकी ।।
अति सोभित हे दुति पीथल यों जुग जोर अनूंपमता चलकी ।
मनुं भादव मास उजास लियें यह स्यांम घटा न छटा झलकी ।।१०२

अथ रस रास क्रीडा वर्णनं

दोहा

निरत करत जदुपत जुवत, अति गति हित जुत अेंन ।
चितवत रतिपति रति सहित, तजत सुमत छति चेंन ।।१०३

[सवैया]

व्रज कुंजनमें व्रषभानुसुता हरि रास रच्यो रस रीति भलें ।
पकरें मनमोहनकों दुलही दुलही मनमोहन लाल छलें ।।
पट ओट विराजत हे मुष सुंदर नाहके नेंन चुराइ टलें ।
तब मोहि लयो मन लालनको सु छिपाइकें अंग छिकाई चलें ।।१०४

अन्यच्च

[कवित्त]

सरदकी रेंनि रस रास रच्यो राधे लाल ।
मनसिज देषि सोभा वारि डारों कोरि कोरि ।।
वांसुरी उपंग चंग मंडल श्री वींन वजें ।
राग व्है अनूंप ओ मृदंगकी सुघोरि घोरि ।।
छेल यों छवीली छलि करिवेकों ताही छिन ।
आपुसमें केलि काजें वदी मिलि होरि होरि ।।
पीथल गुपाल लाल बालकों गहन तवें ।
बालही गुपालजूकों पकरत दोरि दोरि ।।१०५

अथ राधिकाके झूलवेको वर्णनं

[सवैया]

पन्नग केलि करत्त उडग्गन चंद दु सूरज हें अलिकारे ।
षंजन कीरहि दांमिन की दुति कोकिल पोत मुनी जुग भारे ॥
केहरी हंस गयंद गुमांनतें हे सबकी छवि रूपु सुढारे ।
जाही हिंडोरेपें झूलत राधिका ताही हिंडोरेपें झूलत सारे ॥१०६

अथ जुगलके झूलवेको वर्णनं

रेशम डोरी रँगीन रसें अरु पाटुरी मानिक हीर अमूले ।
चंचल चंद्रमुषी सषियें चित चातुरीसों सु झुलावत कूले ॥
पीथल स्यांम ओ बांम महा मन मादिक मेंन भरे तन फूले ।
लार लियें लषि बाल रसाल यों झूलें गुपाल तमालके झूले ॥१०७

अथ सब व्रजनायका नायककों वसंत वंदावन आई ताको वर्णन

[कवित्त]

चामीकर थाल सो गुलाल जुत लसें कर ।
ताके बिच कलच्छा सजल छवि छाई है ॥
जवनके पात अरु मोरधरे माकंदके ।
अगर अबीर ओ सुगंधि सुरसाई है ॥
पीथल सुरंग रंगे पहरें दुकूल अंग ।
नींके सुर पूरि राग पंचमपें गाई है ॥
लालकों बसंत आजु व्रजकी सवेई वधू ।
लियें रस रीति पीति वंदावन आई है ॥१०८

अथ सब नायका नायककों वसंत वंदावत हें ताको वर्णन

[सवैया]

अंबके मोर धरे हरि सीसपें चारु गुलाल सबें तिय डारी ।
गंधि सुगंधिनसों चरच्यो तन मेंन कटाछन सेंन सँवारी ॥

यों रसके चसके मुसके मिल गावत मोहनलालकों गारी ।
पीथल आजु बसंत गुपालकों नीके बँदावत हें व्रजनारी ॥१०९

अथ जुगल होरी पेलत हैं ताको वर्णनं

[कवित्त]

बांनिक बिमल बाल अमल उदोत लाल ।
कमल सहित ताल गढे तिंहि तीर हें ॥
सघन बनें तमाल ताके तरु फागु प्याल ।
अगर उडें गुलाल सषा सषी भीर हें ॥
गावत जुवति गाल पीथल महा रसाल ।
राधिकापें श्री गुपाल डारें रंग नीर हें ॥
प्यारी कहें तजो आज नयो पिय असो हाल ।
तूटी उर माल देषो भीज्यो नव चीर हे ॥११०

अन्यच्च

पेलत हें फागु अनुराग बाढें प्यारी पिय ।
सोभित सुहाग भाग पीथल सु पीतसों ॥
लालपें गुलाल बाल डारत उमंग अंगु ।
बालपें गुवाल रंग डारत अभीतसों ॥
स्यांमकों सबेई साज आपुंनो सजायो स्यांमां ।
संगको सहेंली बाजे बजावें संगीतसों ॥
गारी अति भारी रसकारी व्रजनारी ।
गिरधारी लषि तारी देकें गावें रस रीतसों ॥१११

अन्यच्च

[सवैया]

मिलि पेलत होरी किसोरी किसोर ब्रंदावन कुंजनमें सरसें ।
तव बाल गुलाल गुपालपें डारिकें छोरत हें पचिका करसें ॥

अरुनाई लियें जल चूवतहें पियके बपुतें उपमां दरसें ।
यह पीथल स्यांम घटा मनुं सुंदर बूंदन लाल रंगें बरसें ।।११२

अन्यच्च

[कवित्त]

षेलें रस फागु ब्रज जीवन सकल बांम ।
होत रंग राग बजें बाजे सुघोरतें ।।
करत किसोर घात द्रगनकी तियनसों ।
तियन द्रगन घात करत किसोरतें ।।
सांवरेके आस पास रमत छबीली सब ।
पीथल लसत सोभा मानों इंहि जोरतें ।।
ओर दिनां चपलाकों घेरे घन चहूं ओर ।
आजु चपलांन घन घेर्‌यो चहूं ओरतें ।।११३

अथ नित होरी वर्णनं

[सवैया]

लोचन लाल गुलाल लियें पट पीत महा घसि केसरि घोरी ।
स्यांम सरीर रच्यो अा बहु गंधिहि पंचममें मुरली घन घोरी ।।
नेह तरंग छुटें पचिका तजि लाजकें भांमिनसों गरजोरी ।
पीथल षेलत मोहनजू नित राधिकतें इंहि रीतिसो होरी ।।११४

अथ वसंन हरवेके समेको वर्णनं

[कवित्त]

करत ही केलि जल षेल जमुनामे हस ।
पीथल वढाइ सवें आनंद अपारो हे ।।
अंचल उतारिकें नीहचल धरे हे धांम ।
चंचल सु आइ चोर चढ्यो तरु कारो हे ।।
कीजिये महर अव दीजिये महर लाल ।
भीजिये सु हरि अति होत यों अवारो हे ।।

बसन तजोंगी ब्रज हसनको कांम कहा ।
बसन हरे हें यातें बस न हमारो हे ।।११५

अथ जुगल जलक्रीडा करत हे ताको वर्णनं

सजल सरोवरमें सोभित सुन्हेरी नाव ।
छात अो विछोंना जरदोजी छबिकों लियें ।।
बैठे बलवीर ब्रषभान सुता नागर दू ।
रूपके उजागर धों मेंन वारुनी पियें ।।
स्यांमाँ अरु स्याम रस रंगकी करत बात ।
पीथल प्रकास हित हरष बढ्यो हिये ।।
फूले कंजु अेंन लषे कंजु नेंनी कंजुनें ।
करें रस चेंन सेल कलि अंबुकी कियें ।।११६

अथ नायकाके नायकसों मिलवेको अभिलाष

[सवैया]

ढूंढत हे मनमोहनकों मनमोहनी पीति वढी रस कारी ।
पूछत हें सवही बनितानसों हें जु कहां कहोरी बनवारी ।।
स्यांम बताअो तो भाअो महा मन देहों बधाई सदाई सुभारी ।
पीथल वै ब्रजनारी कहे वह षोरी हे भारी तहां गिरधारी ।।११७

अथ छंद भुजंगप्रयाति

अथ नायका याहसों अभिसार कियो ताको वर्णनं

[कवित्त]

कनक बरन देह रची निज पांनि बेह ।
भाल मृगअासवकी बेंदी सुभ राजत ।।
कठिन उरोज अो सरोज लसें अांननपें ।
सोंहें मुषराग जुत नीकी छवि छाजत ।।

हियें घनसार हार जेहर जराइ पाय ।
नूपुर मधुर सुर बांनिकतें बाजत ।।
पीथल मुरारपें यों चली हे सुनारि जवें ।
फव्यो अति रूप तवें देषें रति लाजत ।।११८

अथ नायक नायकाके कुंजको मिलाप

भेंट भई कुंजनमें नवला नवल जूसों ।
पीथल बढ्यो हे जवें आनंद उमंग ही ।।
नंदके कुंअर ओ कुंअरि व्रषभांन रच्यो ।
आषुसमें केलि काजें महा रस रंग ही ।।
लोचन सुमन नेह पलक सु धीर लाज ।
यहे विधि भई जवें उपज्यो अनंग ही ।।
लगि जात षगि जात पगि जात जगि जात ।
डगि जात भगि जात दुहूंनके संग ही ।।११९

अन्यच्च

कोमल अमल अंगी बिमल तालसे वेंन ।
नेंननको सेंन अेंन प्यारेसों पगाई हे ।।
राजें रस पुंज कुंज पल्लव ओ फूल तहां ।
स्यांमसों यों वांम पीति पुबीसों षगाई हे ।।
लीनों हरि हरिकों छिनकमें मन मोहि ।
पीथल सु कांमकला जोतिसों जगाई हे ।।
गोरी तन भोरी रंग बोरी चितचोरी करि ।
ढोरी ब्रज षोरी मांहि लालसों लगाई हे ।।१२०

अथ ग्रीषम मासकी रितुवर्णन

सीतल सुगंधि मंद आनंद समीर तहां ।
सलिता सलिल वहु विमल वहत है ।।

ताके तट दीपें द्रुम सघन नवीन पात ।
कुसुम कलित अलि चलत लहत है ।।
ता बिच सदन सुष छाजत बिछोंना छात ।
सारंग व्हे छूटें नल पीथल कहत है ।।
ग्रीषमके मास रस करन विलास रति ।
स्यांमां अरु स्यांम धांम कुंजके रहत है ।।१२१

अथ सुरतांत वर्णन

[सवैया]

केलिके कंजु मुषी पतिसों रति अंत महा छविसों छवि छाई ।
माल तुटी ओ फटी अंगिया नष रेष रद छत ओप सुहाई ।।
सीसतें पीथल छूटि लरी बहु बांनिकतें कुचपें दरसाई ।
ता पल रूप लसें इंहि भांति सुता संविता सिव सीसपें आई ।।१२२

अथ दांन समेंको वर्णन

आजु में प्रात ही गोकुलकों गई आइ मनोहर जू दधि लूटी ।
छींन लयो अरु चीर लिलंबर सीस हुती गगरी सोइ फूटी ।।
बांह गही झपझोरी महा तब ताहीतें हारनकी लर तूटी ।
कांन्हर आगर कीजे कहा जब आलीरी मोतन माल दे छूटी ।।१२३

अन्यच्च

बेचनकों दधि माषन गोपिन आई व्रंदाबनको जुरि सारी ।
आंननकी छबि सोभित हें अति दीपति हे दुति चंदतें भारी ।।
षेल कियो उनसों नंदलालन षेंचत चीर जु खावत गारी ।
गोबिंन गोरसके कज पीथल छींन लई बिगरी बनवारी ।।१२४

अन्यच्च

पटकी मनमोहन मोंहनकों छछियां सब छीन लई घटकी ।
घटकी सुधि भूल गई सिगरी गगरी जु करी बटकी बटकी ।।

बटकी बंसुरी सुंनि ता छिनमें मुरझाइ भाइ महा सटकी ।
लटकी छबि जोर बनी हरिकें अरु ओर बनी पियरे पटकी ॥१२५

अन्यच्च

[कवित्त]

बेचनकों गोरस चली हे ब्रजचंदमुषी ।
पीथल मनोंहरसों मिलन सुरत ही ॥
देषि लई लाल जबें दांन मांगबेके मिस ।
गहिकें दुवांह झकझोरी हे तुरत ही ॥
गागरी सु दधिहार कंचू कस लाज नेह ।
यहे गति भई तिय नेंसुक मुरत ही ॥
फुटि जात लुटि जात तुटि जात छुटि जात ।
जुटि जात ता समें तुरत ही ॥१२६

अन्यच्च

बेठी हठी गेह मांज फेरि नई बेर सांझ ।
तऊ उठि आई लाल तज्यो कांम सारो हे ॥
बीलत अनत मोर दादुर करत सोर ।
वूंदन वरष जोर वाजत वयारो हे ॥
जमुंनां जू पूरजात जबें जल मांहि परी ।
भागनतें भयो आज जीवन हमारो हे ॥
सुवत ही नेंकु कांनि गई सबें सुधिसांन ।
बांसुरी तिहांरी किधों टोनाको टिपारो हे ॥१२७

अथ स्यांम गोधनके संग गेह आवत हे ता समेंको वर्णन

[सवैया]

मोर मुकुट मनोहर मूरति कुंडल कांन सु काछनी काछें ।
नीरज नेंन बिच छन बेंन त्रिया लषि सेंन करेजु कटाछें ॥

परिशिष्ट १

पाठान्तर

	छन्द संख्या	पृष्ठ संख्या	छन्द-पंक्ति-संख्या
पीथल निति प्रति पोय	१	१	२
तिहि वीच विराजत है दुलरी	१८	४	३
गति देपि मराल सुवुधि गई है	१९	४	२
यह गंग तरंगनसों पलकी	२०	४	४
मानों हरे पात लपटाने चहूं ओर आछे,	२२	४	७
पठाई मो निहारिये	२५	५	२
उहां चलिये अव नारि नवीन	३५	७	३
ककन जटित हीर	३९	८	३
फेरि फेरि नारि नारि	३९	८	८
सुभोह बनाव वेने इहिं रूप	४५	१०	३
रूचें रद्नच्छद हद्द गुपाल	४७	१०	३
मनो पंचसायकके दु निषंग	५५	११	२
धरें गति गोंन अभें नंदलाल	५६	११	१
सुनायक स्याम यहै तिसु नारि	५८	१२	३
अनूप अनूप लियें गति	६२	१३	१
पलकां पोहप रस ज्यों स्यामां अरू स्याम	६४	१३	७
राधिकाके मुष दुति कुहू निसि भई राका	६९	१५	७
कीर ओ दुजेस टारयों विद्रुम भपें मराल	७१	१५	५
सुधाधरसों सु छवि मुष	७८	१७	३
मोहि जादू अति कियो है	८३	१९	८
वेदन वैद न जानत कोउ	८४	१९	८
मोद मिटचो मनको, हुलास हटचो तनको	८६	२०	७
फटचो जु उर धनको विरह जाग्यो जिये	८६	२०	८
अब बलवीर हि ल्याय हो	८७	२०	२
चीर जरी वेसरी तरोंना टीको मांग हार	९१	२१	७
भूपन है ब्रज भूपन मो तन	९२	२२	७
पीथल विविध विधि सबही सिंगार सोंज	९४	२२	५
वेसरि सिंगारको सिंगार जलजातको	९४	२२	६
स्यांमा सजि सिंगार	९५	२२	१
झूठी किंहिं काज बीर बातन बनात है	१०१	२४	२

पीथल फेंट लसें मुरली कर ली लकुटी हरि गौवन पाछें ।
देषि छकी छबि केउ छबीली छबीलो लियें छबि ग्रावत ग्राछें ।।१२८

अथ गेह ग्राये ताको वर्णन

धेंनु चराइके ग्राये गुपाल घरें अपुनें ग्रति सोभा सु ढारें ।
देषत मात जसोमतजू मुष सुंदरतें पटसों रज झारें ।।
ग्रारती कीनी तबें गुरु नारि छिनों छिन राई ग्रो नोंन उतारें ।
पीथल ता पल बाल सबें ब्रजलाल रसालको रूप निहारें ।।१२६

अथ प्रात समें दूती नायकके उत्तर प्रत्युत्तर

[कवित्त]

को हे या सलोंनी तुंम पूछत हो कांम किहि ।
एक दिनां बात करी जानी हे में जांनी हे ।।
जांनी हे तो ग्रांन देरी ग्रांनि देहों काहु रोज ।
काहू रोज कांमको न संगसों सयांनी हें ।।
सयांनी सबेई छलि एतो चित हेत कहा ।
हेत हे तो कहों हों री चलो चले पांनी हें ।।
पांनी सिगरी सुजात जात हें जु ग्रोर ग्रोर ।
कहा कहे सांची कही ग्राली चल मांनी हें ।।१३०

व्रंदावनचंद ग्रानंद मई सुषकंद सु चंदमुषी जुग संग

दोहा

ललन मिलन चित चाहिकें, गए उमंग रंग लेंन ।
तरुनी जमुंना तीर तब, चितवत बढचो सुचेंन ।।१३१

अथ राधेलाल मिलिकें जमुंनाके तीर गये ताको वर्णन

[सवैया]

चेंन बढचो मन मेंन महामन मोहन मोहनी भेंट भई हे ।
रंग उमंग तरंग लियें ग्रंग पीथल पीति छबीली छई हे ।।

हौंस हुलास बिलास हियें हि लसों हरि नारि बिहार मई हे ।
पीतम प्यारी मिले जमुना विरहा तन ताप विलाइ गई हे ।।१३२

[कवित्त]

कान्ह व्रषभान सुता गढे भांन सुता तीर ।
भांनके उदित दुति दीपत विहांनकी ।।
अंसु भुजा दियें नेंन सुधा सब पियें अरु ।
सोभित सुगंधि लियें बीरी मुष पांनकी ।।
राधे राधेलाल दोऊ रूपके रसाल लसें ।
बरनी न जात सोभा गुंनके निधांनकी ।।
पीथल निरषि छबि ता छिनकी असी ।
डिगी गति मति अति रतिपति पंचवानकी ।।१३३

अथ जुगलको केसरिया सिंगार

[सवैया]

केसरी पाग बनी हरिकें अरु प्यारीकों केसरी सारी उढ़ांई ।
केसर षोरकी वागा हे केसरी केसरिया अंगियां जु सुहाई ।।
पीथल केसरिया पटुका रंग केसरिया लहेंगा छबि लाई ।
केसरी सेजपें केसरिया दोऊ केसरिके सरि केसरि छाई ।।१३४

अथ नवोढाको सुरतागम लिष्यते

[कवित्त]

वहुतें सकुच लियें दोऊ कुच हाथ दियें ।
मोहनके पांनि लगें ताको बपु थर थरत ।।
दीठ न मीलात औ लजोंही ज्यों लजात वांम ।
सुरतिकी वात कियें छाती अति धर धरत ।।
ललाजू भरत अंक ललनांको के निसंक ।
पीथल वा नारि हियें नायकके डर डरत ।।

ग्रेसी गति होत बाल नवोढाके ग्रंक जवें ।
प्यारी परजंक तवें पीतमके पर परत ।।१३५

ग्रब याकी सुरति वर्णनं

ग्रानंद उमंग रति रची ग्रति रस जुत ।
प्यारी नव नागरीसों प्यारे नंदलाला यों ।।
ग्रासन ग्रलिगन ग्रो चुंबन चतुर हरि ।
करत किसोरीके सुरंगतें रसाला यों ।।
वरजें वनाइ मन लरजें विहारी डर ।
पीथल सु केलि समें बांम इंहि हाला यों ।।
ससकति उझकि कटि लचकति झुझकति ।
झुकति पति झपति द्रगबाला यों ।।१३६

ग्रथ सुरतांत वर्णन

[सवैया]

रति मांनि उठी मनमोहनसों तव सुंदरि सुंदरता चलकें ।
जब पीथल छूटि लटी तिय सीसतें मोतिनहार विचें झलकें ।।
स्रमतें ग्रति लेत उसास सु बांम सुभास महा छवि यों भलकें ।
मनुं गंग प्रवाह परी मधि नागनि बूडत पेरनकों ललकें ।।१३७

ग्रथ नायका नायककी सब राति वाट हेरी पें न ग्राए तब सषीसों कहत हे ताको वर्णनं

[कवित्त]

रजनी विहांनी दीप हींन दुति ठांनी ।
ग्ररु चिरियां चिहांनी सोरवा रस महा भयो ।।
ग्रंवर लसत लाल सीतलता मोतीमाल ।
फूलत गुलाब चंद मंदप्रभा व्है गयो ।।
जागी वहु बेरकों सांझतें भयो सवेर ।
मोहन करी ग्रवेर दरस हू ना दयो ।।

पीथल न आए लाल आंवन कहाइ मोसों ।
सोतिनके संग जाइ रंग रससों ठयो ।।१३८

अथ पंडिता वर्णन

[सवैया]

आलीरी आजु महाछविसों अपुनें ग्रह सुंदर आवत मोहन ।
लोचन लाल पलें परथी कहे देषि गुपालसु आग्रे हें मोहन ।।
ओरनके रसरंग पगे इनकी वतियां कहि आवत मोहन ।
असे सुभावके नाइकपें हितसों चितमें अव मेरोइ मोहन ।।१३९

[कवित्त]

आग्रे हें किसोर रति मांनि कहूं ओर गेह ।
पीथल सु वात मोसों पीतिकी कहत हे ।।
करत हे सोंह लषि चढी हे उनीदी भोंह ।
घाइनपें नोंन डारि असें क्यों दहत हे ।।
रेंनिके प्रगट चेंन दीपत सरीर बीर ।
असी दसा देषि कोऊ मोऊसी सहत हें ।।
वस नां लगत आली तुही समुझाय याकों ।
रसनां कहत कछू रस नां रहत है ।।१४०
जागे सव रेंनि उहां कीनो सुष चेंन स्यांम ।
लागे दुष देंन हमें वाकों की नींहाल हें ।।
आग्रे हो भये विहांन असे हो कृपानिधांन ।
मोकों परी जांनि हियें विना गुंन माल हें ।।
सीषे यह रीति कहां करत हो पीति अव ।
सो तो परतीति नांहि रावरी गुपाल हें ।।
सुनों जू किसोर तुम जाइ कहूं ओर ठोर ।
लोचन लगाए तातें लोंचन ही लाल हें ।।१४१

अथ पंडिता नायका अरु नायकके उत्तर प्रत्युत्तर

लोचन उनींदे लाल गए हम व्याह रेंनि ।
भालपें महावर सो उहां रंग परचो हे ॥
बिनां गुंन माला उर मिलेजू परसपर ।
कंकन क्यों पीठ स्यांम पीठ पांनि अरचो हे ॥
बोलत मधुर भई बातन बहुत आजु ।
अंजन अधर छल समुधन करचो हे ॥
पीथल यों जांनी पलें लगीवी कलीकें हरि ।
करी चतुराई यातें रोस परहरचो है ॥१४२

[सवैया]

कबि जावक भाल लसें द्रगलाल बिनां गुंन माल विराजें हियें ।
अधरांनपें कज्जर पीक पलें पर पीथल यों हरि रूप कियें ॥
रति सोतिनके संग रेंनि रचे रंगसों छबि हें अंग ओप लियें ।
अब सोंह क्यों बात सुनो यह बात भये परभात ही देषें जियें ॥१४३

मनोद्दीपन

[कवित्त]

निज रस रचे स्यांम रचे रस आंन प्यारी ।
आनि यह बात कांन सुनाई सषी षरी ॥
भूलि पांन पांन जांनि प्यारेकी निठुर पीति ।
पीथल गह्यो जु मांन भांमिन गुसे भरी ॥
भृकुटी चढाई बपु बिरह बल ।
नेकु न सुहाई सुष स्वाद स्यांमां जा घरी ॥
अेसें अलवेलीको लगी हें तलवेली तन ।
जेसें जलहींन मींन जरी तरफें परी ॥१४४

अथ मांन वर्णनं

कहा एतो गरब धरचो हे मान मोहनसों ।
देषत पतीजिये सो सुं नेंन पतीजिये ॥

लोचनं हैं लाल अरु भृकुटी कमांन चढी ।
रोस न समात ऊंचे सासन क्यों लीजिये ।।
कबकी कहत हों पे सुंनत हो क्योंहूं नांहि ।
पीथल प्रबीन नेंकु कांन इतें दीजिये ।।
कीजिये गवन अब वात मेरी मांनि आली ।
वात मेरी मांन अब मांन बिदा कीजिये ।।१४५

अन्यच्च

लेनकों में आए ब्रजनायक पठाई ।
अति होत हे अवेर सुभ मांनियें सबनको ।।
ग्रीषमकी रेंनि यातें पेंडे स्रम होत दूनो ।
कोमल बिमल अंगी करो में पवनको ।।
तोसी ओर कोंन ताकी पीथल चलें ये बात ।
देषें मुष इंदु छबि नांहिं न छवनकों ।।
कीजिये गवन अब रूप कीर वन राधे ।
भांनको भवन तजि कुंजके भवनकों ।।१४६

[सवैया]

यह काहूके बेंन चितें धरिकें करिकें अति रोस कहा योग जो ।
लषि वोलत हो तुंम भूंठ इतो तिहितें तनमें कछू एक लजो ।।
हठ छांडि हियेको चलो हरिपें अरु पीथल साज सिंगार सजो ।
सुनि में जु कही तुंमसों वतियां सब मांनत जो अब मांन तजो ।।१४७
लषि लेंन पठाई हे मोहि मनोहर तोहि कहा कहिये बनरी ।
सब जांनत हो वहु ग्यांन महा तिहितें तजि मांनि चलो बनरी ।।
हरि चातुर आतुरहे अतिही कल नांहि परे पलतो बनरी ।
करि गोंन सिंगार अपार सुधारि बिराजत स्यांम महा वनरी ।।१४८
आई मनावनकों अब तू अरु वात कहे उत होत बिहारे ।
में कछू देत नंही चित तू अति मेरोई आंनन फेरि निहारे ।।

नांहि चलों नंदलालनपें तब क्यों बहुतें विरियां पचि हारे ।
पीत बन्यो पट कुंडल कांन तिरीछें हसें यह पीछे तिहारे ।।१४९

अन्यच्च

[कवित्त]

जेती बात मोकों प्रात कही तुंम जादोंनाथ ।
वेती सब याके पास आइकें उचारी हों ।।
सुनत ही धरचो जोस बहुतें भई सरोस ।
मारें मुष दई गारि तेई सही गारी हों ।।
एती भयें पीथलव आगे नंदलाल भलें ।
आपुंनि मनाय लेहु लषों बनवारी हों ।।
नेकु न निहारी मद मांनतें तिहांरी प्यारी ।
सुनों जू विहारी हों तों हाहा करि हारी हों ।।१५०

अथ मांन मोचन

बेठी गहि मोंन बाल मांन ठांनिके बिसाल ।
भोंहनि चढाइ अति आंषें सतराइकें ।।
करी मनुहार दूति हाहा करि जोरें कर ।
मांनी नंही भांमिनी सु रही मुरझाइकें ।।
ताही छिन मोंहनजू मोंहनको आइ नीकें ।
मौंहनीके पास सुषरास बेठे आइकें ।।
पीथल रसाल कीनी नेंन सेंन मेंन पगी ।
बात न बनाइ लींनी मांनिनी मनायकें ।।१५१

अथ प्रवछतपतिका वर्णन

लेनकों अक्रूर आजु पीथल गुपालजूकों ।
दुष्टको पठायो लषि आयो जदुवंसको ।।
करतु हें गोन मधुपुरी जेबे राधे हरि ।
आपुंनी पहिल डर धरत हें कंसको ।।

ठाढें यह सुंनि बात भांनकी कुँवर तबे ।
देष भुव बिरहतें वाढचो बल संसको ।।
झरें द्रग मोती अंसु परे बिछियांन पर ।
षंजन बमन यों चुगन कल हंसको ।।१५२

अथ प्रोषितपतिका लिष्यते

गोंन करचो नाह जबें गई सुधि सान सवें ।
षांन पांन रागरंग अंग न सुहात हें ।।
भूलि गई गेह देह नेहको विजोग भयो ।
बेहके लिषे सु अंक केसे के बिलात हें ।।
धूंधरे भये जु नेंन बोलत बिकल वेंन ।
नेंकु न परत चेंन आंसू ढरें आत हें ।।
कहा बात कहों विरहनिके बिरहकी हों ।
दोऊ हाथ हाथकी अंगुठीमें समात हें ।।१५३
नाह तिहारो विदेसनमें सुनि ।
ओधिपें आवनको अब लेषन ।।
उद्धव बात बनाइ सुनावत ।
बाल रसाल हियें यह लेषन ।।
फेरि इते पर पाती पठावन ।
कागज दोति मगाई हे लेषन ।।
यातें कछू नहिं काज सरें ।
तब काज सरे गुरुदेवको लेषन ।।१५४
जबतें स्यांम गवन करिकें विदेस गये ।
भीतर रहत भोंन लांघत न देहरी ।।
वाढचो रति नाह मेरे नाह बिन आली ।
सुंनि विरहा संतात अति जारत हे देह री ।।
कासों यह कहों बात मेरी या बिथाकी घात ।
पीथल संदेस कोऊ मोंहनकों देह री ।।

आस न रही हे अब सासकी दरस बिन ।
चाहिये जिवायो तो दरस अब देह री ।।१५५

[सवैया]

प्राची गुफा सुष सेंन किये सब द्योंस अवें निसिके मुष धायो ।
नांहिन अे किरनेंन षतीछन षेलनकों वन अंबर पायो ।।
मारि महातम वारन मत्त सु तारनमें कुकरा बगरायो ।
पीथल यों जदुराज विनां दुजराज मनों मृगराज व्है आयो ।।१५६
वेठी वियोगनि मंदिर अंगन रेंनि लगे उनको अधिकांई ।
ताहीतें बींन लयो जु बजावन गावन राग महा सरसांई ।।
ता छिन देषि लयो ससिकों तब पेषत ही हियेमें मुरझांई ।
पीथल याको विचार कहा सु धऱ्यो धरनीं पर बींन उहांई ।।१५७
पीतम गोंन न भावत भोंनरु सोच महा तजि ओर बिलासन ।
नांहि परे कल नांहि पल नांहि सुहावत पांन सुबासन ।।
मोहनके विछुरें बनिता करपें धरि आंनन लेत उसासन ।
पीथल ता छिन अेसी लसें छवि इंदु मनो अरुबिंदके आसन ।।१५८

[कवित्त]

भावे नहीं षांन पांन आवे नहीं नींद मोहिं ।
तजी सब सुसांन जोर व्रहको जग्यो ।।
दीसत न दीह रेंनि धूंधरे भअे जु नेंन ।
आंननसों घटे वेंन सोच आइके पग्यो ।।
लागत हे सेज लाय लाय ही लगत सबें ।
आवे मुरछाहि गति तेज अंगको भग्यो ।।
आली सुंनि अेसी वात प्यारे विन करी घात ।
नांव तो अनंगपें अनेक अंग व्हे लग्यो ।।१५९

[सवैया]

बाल अली सुंनि मो जियकी जिय बीतत सो विधि कोऊ न पाये ।
दाहत हे विरहा तनकों तनके रसरंग सवेई विलाये ।।

चेंन परें नहिं बासुर रेंनिमें बासुर रेंनि महादुष छाये ।
आंवनकी पिय ओधि वधी वह ओधि वधी तोंऊ पीय न आये ।।१६०

अथ घन मदन बहादर सम विरह वर्णनं

[कवित्त]

तडिता बंदूक सजें पांनि पवनाइ ।
पांनी बूंदन सजोर बांन कांमिन कदनके ।।
बगनकी पांति अति उज्जल षडगधार ।
धुर्वा अनूंप ढाल सांवन सदनके ।।
लागत हे चोट हियके किनके साद ।
सांगधा औरि पुलाल बिन विरहा बदनके ।।
तातें पहिचांनि गंनि बात मेरी मानि ।
आली वादुरन होय औ बहादुर मदनके ।।१६१

अथ घटा गज सम विरह वर्णनं

[सवैया]

दंत विराजत हें वग पंति सुकारी घटा रंग स्यांम सुहावत ।
बोलत दादुर वीर घटा मसती झरिबो बरषा बरषावत ।।
अंकुस त्यों चमके चपला कर लेकें महावत इंदु चलावत ।
पीथल यो विरही तिय पें मनुं पावस मद्द दुरद्द व्हे आवत ।।१६२

अथ सांवन फोज सम विरह वर्णनं

[कवित्त]

बद्दल सुभट साथ दांमिनी बंदूक मानों ।
नोबतिकी घोर सोई घोर घटा लाई हे ।।
परत हें बूंदें सो तो तीरनकी मार होत ।
तन्यो हें धनुष सो निसांन छवि छाई हे ।।
कोकिल करत सिंधू बोलत नकीव मोर ।
मेरो तन मारिवेकों कोप करि धाई हे ।।
असी विधि आजु असमांन व्हे चढी हे ।
आली सांवनकी फोज घनस्यांम बिन आई हे ।।१६३

अथ वरषा रितु नेंन समता विरह वर्णनं

[सवैया]

भोंह धनुंष लसें अति सुंदर बाजत हें पलकें पुरवाई ।
डोरे ज्यों दांमिन कोइलकी कनि सोभित हें बग तेसें सित्ताई ।।
पीथल अंजन सो ऊंनयो घन आंसुनकी झरियां जु लगाई ।
बाल षरी ब्रजराज बिना असें आंषिनमें वरषा रितु आई ।।१६४

अथ चोमासेकी रितुको वर्णन

[कवित्त]

आवत न नींद कहूं भावत न षांनपांन ।
अंग अंग अकुलात करी कांम घतियां ।।
मोहन लगाइ मोह गोंनकें विदेस गए ।
ता दिनतें नांहि चेंन जरत हें छतियां ।।
...................................।
...................................।।
नीर झर लांवनकी मेरो तन तांवनकी ।
डग भई बांवनकी सांवनकी रतियां ।।१६५

[सवैया]

पीतम आंवनके गिनतें दिन आंगुरी छालनतें जु छवाए ।
धूंधरे नेंनन ए मग देषत वेंन थके पिय पीय रटाए ।।
मोहि संताब लगायो सषी सुंनि आपुं न जाय विदेसन छाए ।
सांवनमें मनभांवन आंवन ओधि बदी पें अजों नंही आए ।।१६६

[कवित्त]

जा दिनतें याको पति चल्यो हे विदेस वीर ।
ता दिनतें विरहके ताप जारबो करें ।।
हरी हरी भूमि देषि हरी हरी जपे जिय ।

बरही पपीहनके सोर डरिबो करें ।।
भावत न भोंन दिन रेंनिकी षबर नाहिं ।
तज्यो सुष सबें मन सोच करिबो करे ।।
स्यांम नहीं आये यातें भांमिन विकल चित ।
सांवनके झर जेसें नेंन झरिबो करें ।।१६७

घोर उठे घन बांनिकतें बनि जोर महा मन काम जगायो ।
भूमि हरी द्रुम बेलि षरी बहु मेघ झरी बिरहा तन तायो ।।
मो दुष हे जिय बात सुंनो तिय गोंन कियो पिय बाहिर छायो ।
ओधि बदी बरषा रितु आंवन सांवन आयो पें नाह न आयो ।।१६८

सांनभगें हिय सोच पगें ब्रह जोर जगें लगें कांम करेरो ।
गेहमें बेठी रहों डर मेंहके देह जरे अति नेहको घेरो ।।
मोर करे बहु सोर कतूहल कोर करेजेकी तोर घनेरो ।
सांवनमें मनभांवन आवन कीजे हरी सुष पांवन मेरो ।।१६९

घोर उठे घन दामिनकी दुति भांमिनकों बहु क्यों दुष दीजे ।
बेलि चढी नव पल्लव हे द्रुम या रितुमें तियको रस लीजे ।।
आस छुटी अब जीवनकी मनमोंहन जू तुंम देषत जीजे ।
कांमिनके तन कांम बढ्यो मनभांवन सांवन आंवन कीजे ।।१७०

अथ आगम वर्णनं

[कवित्त]

फरकत आंपि वांई वांई फरके जु बांह ।
सोच तन सोच बढ्यो निज सुष मांनिये ।।
सोवत ही रेंनि सम दीपत सुपन सुभ ।
आंगनमें काग अति वेंन सुभ ठांनिये ।।
लसत प्रकास प्रभा भवन उदोत भयो ।
पोथल कहों सु बात नीकें उर आंनिये ।।
ओधि हू लगी हे आइ वासुर सुहाय यातें ।
आली मनभांवनको आंवन सो जांनियें ।।१७१

अथ आंवनको वर्णन लिष्यते

नीको सुभ कारीं भारी आजुको दिवस यह ।
सुभहू पहर घरी झरी रंगकी ॥
आये हें गुपाललाल प्यारे परदेसनतें ।
अति ही तरंग अंग उपजी अनंगकी ॥
सांवरे सलोंनें स्यांम भेंटत नीहाल भई ।
विरहा अगिन विथा गई सब अंगकी ॥
वहुतें पुसाली आली देषें वनमाली मेरे ।
कहत वनें न वातें पीथल उमंगकी ॥१७२

अथ भावन मनभांवनयें सांवन ज्यों वनिकें सुषधांमको गई ताको वर्णन

स्यांम घटा अलकें विथुरी सुर चापहुतें छवि भोंहन छाई ।
दांमिन त्यों दुति दंतनकी अरु वोलत कोकिल वेंन सुहाई ॥
सीस गुहे मुकता झर वूंदन मांग मनों वग पंति वनाई ।
पीथल मोहनको मनमोहन सांवन ज्यों वनि भांमिन आंई ॥१७३

अथ स्यांमां स्यांम सुखधांममे मिले ता उछवको वर्णन

दोहा

विधु वदनी मोहन मदन, मिले सदन सुष आज ।
विरह कढचो आनंद वढचो, रस रंगत रंग समाज ॥१७४

अथ छंद त्रोटक

वहुते दिनतें जुग भेट भई, विरहा तन ताप विलाय गई ।
मन मोद विनोद प्रमोद वढ्यो, दुषषेद निषेद सुपदे कढचो ॥१७५
अति आज उमंग छई अंगमें, हरि वाल मिले रसके रंगमें ।
तियकों मनमोहन अंक भरें, उरसों उर जोरिकें चित्त हरें ॥१७६
करपें कर वांमके स्यांम धरें, मकरध्वज वाढन वात करें ।
वनिता जिय माधव पोति घनी, जिम माधवकी वनितासों वनी ॥१७७

रुचि रूप अनूप दंपति लसें, हितसों चषसेंन करें जुहं से ।
धन बासुर रेंनि सु जांम घरी, वरषें दोऊके द्रग नेह झरी ॥१७८

अथ जुगलको कसूंमल सिंगार सुरतागम लिष्यते

दोहा

पिय प्यारी रति केलिकों, सजे सुभग सिंगार ।
बसन कसूंमल रंग सरस, जगमग हीर जुहार ॥१७९

[सवैया]

पाग कसूंमल सोभित स्यामके राजत सारी कसूंमल प्यारी ।
बागा कसूंमल सो बहु सुंदर कंचू कसूंमलकी छवि न्यारी ॥
हें पट्टका लेहंगा सुकसूंमल सेज कसूंमल सोभई त्यारी ।
पीथल ता पर यों दुति दोऊकी मानी कसूंम कसूंमल क्यारी ॥१८०

अथ जुगलके हीरन जटित आभूपन वर्णनं

[कवित्त]

स्याम सिरपेच नीको हीरन जटित लसें ।
हीरन तरोंना तरुनीके छबि देत हें ॥
हीरनकी माल नंदलाल उर सोभियत ।
हीरनको हार बाल हिये हित लेत हें ॥
हीरनके कुंडल कुंवर कान्हजूके कांन ।
कंकन किसोरी कर हीरनके सेत हें ॥
पीथल जुगल आज हीरन को सज्यो साज ।
लषें रतिराज लाज भूलें चित चेत हें ॥१८१

अथ सुरति वर्णनं

वारी गुलजारी रसकारी विच होज वन्यो ।
छूटत फूहारे पांनी वूंदन परत हें ॥

निपट निकट ताके मंदिर फटक लसें ।
हाटकमें भूमि तामें मांनिक जरत हैं ।।
राजत बिछोंनाँ भारी सबें जरतारी ।
साज गांहंन. अनूप राग तानन धरत हे ।।
पीथल कुसुम सज्यो दीपे परजंक तापें ।
नीके रसरीति रति दंपति करत हें ।।१८२

अथ सुरतांत वर्णनं

रेंनिकी उनीदी जगी सांवरेके संग स्यामां ।
गई पुनि प्रात भयें मंदिर विसालमें ।।
छूटी हें अलक रस पागी है पलक धुनि ।
जोवन कलक अति सोहे टीको भालमें ।।
अरुन वरन रेष दीषत महा विसेष ।
नेंननके मांहि पेषि पीथल रसालमें ।।
राजें छबि जोर ओर छांजें छवि नाहि नामें ।
बांधे जुग मीन लाल रेसमकी जालमें ।।१८३

अथ स्यांमां स्याम फूल सिंगार सजि बेठे ताको वर्णन

[सवैया]

लषि फूलन माल वनी नंदलालके फूलनहार सज्यो दुलही ।
हरिके सिर फूलन पाग लसें तिय फूलन सारी महा उलही ।।
छवि फूल झगा अंगियां फुलही परजंक सुहे फुलही गुलही ।
व्रजके रिझवार सिंगार कियो सब ठां फुलही फुलही फुलही ।।१८४

अथ नाम वर्णनं कवित्त लिष्यते

केसव माधव श्रीपति सांवल दीनदयाल हरी गिरधारी ।
स्यांम विसंभर बिठल बांवन कंस पयावन कुंजबिहारी ।।

पन्नग नाथन श्रीपुरुषोत्तम राघव राम मुकुंद मुरारी ।
लाल गुंविद गुपाल मनोहर श्रीव्रजभूषनजू वनवारी ॥१८५

केसव कृष्ण वराह विसंभर राघव राम हरी व्रजचंदा ।
स्यांम गदाधर माधव मोहन लाल गुपाल मुरारि मुकंदा ।
विट्ठल कान्ह दमोदर भूधर दीनदयालजु विष्णु गुंविदा ॥१८६

श्रीमधसूदन माधव मोहन कुंजबिहारी व्रजपतिलाल ।
हरि गिरवरधर कंसनिकंदन राधाप्यारे दीनदयाल ॥
जदुपति जगजीवन घनस्यांमां राघव रामां प्रभु गोपाल ।
करुणाकर केसो कमलापति कान्ह कुंजुधर कृष्ण कृपाल ॥१८७

हरि वनवारी कृष्णविहारी गिरवरधारी बांवन राघव ।
जगबंधन जगदीस कन्हैया जगन्नाथ जगत्राता जादव ॥
मधुसूदन मुरलीधर मोहन राधालाल मुरारी माधव ।
चक्रपांनि गुविंद गदाधर गोकुलनाथ प्रभू रिपु दानव ॥१८८

अथ संतन सहाय करिबेको वर्णन लिष्यते

वहुतें बिमल बेंन नेंन सुष देंन नीके ।
तेसी दुत्ति दीपें उर मोतिनकी माल्की ॥
काछनी कछी हे कटि पावरी पगन लाल ।
कामरी सु कांधे संग राधे छवि वालकी ।
आनंद करन अघरोरकी हरन राजें ।
पीथलके हियें ऐसी मूरति गुपालकी ॥१८९

अथछप्पै

व्रजभुव करत विलास रास रस रसिक विहरिय ।
सीस मुकट छविदेत स्रवन कुंडल दुति भारिय ॥
गल मोतिनकी माल पीत पट निपट विराजे ।
सोभित राधेसंग जुगल छवि नींके छाजे ॥

यह रूप धारि हियमें सदा जानें सब कारज सरे ।
सुभ जुगल चरन नृप मांन सुत प्रथीसिंघ प्रनपत्त करें ॥१६०

अथ दोहा

व्रज नागर वर नागरी, सुभग सलोनी जोर ।
चित चाहे फल जो चहें, जप जिय जुगल किसोर ॥१६१

दूरि करचो हरि द्रोपतीको दुष, चीर बढाइ दयो नंदनंदा ।
दूरि करचो प्रभु पंडुनको दुष, केरों संहारि उबारे हें बंदा ॥१६२

दूरि करचो गजराजहूको दुष, तंतजु काटि दयो व्रजचंदा ।
पीथल एक भजो परमेसुर, दूरि करें सबही दुष दंदा ॥१६३

संकट दूरि करचो ब्रजको सब, धारि गुबर्द्धन श्रीगिरधारी ।
संकट दूरि करचो रिषि नारिको, पांइनकी रंजसों सिल तारी ॥१६४

संकट दूरि करचो वसुदेवको, कंस पछारिकें कुंजबिहारी ।
पीथल अेक भजो परमेसुर, संकट दूरि करें बनवारी ॥१६५

अथ प्रभुके गुन अपार ताको वर्णनं

केसवकी गतिकों कहिबे इंहि भांतिनको सब साज वनावें ।
सुंदर कागज व्है अवनी अरु लेषनकों तरुराज सु लावें ॥
वारिधि दोति अनूप मता छबिसों सवही यह सोंज सुहावें ।
पीथल फेरि दिविटं लिषें हरिके गुनको तऊ पार न पावें ॥१६६

अथ जुगल ध्यांन वर्णन लिष्यते

जुग किसोर जप तू सदा, रे जिय अधम अग्यांन ।
नंदलाल बर बालको, धर थिर उरमें ध्यांन ॥१६७
दूलहलाल गुपाल लषि, दुलहनि बाल रसाल ।
पीथल पल पल नांम लहि, जुगल हरें जम जाल ॥१६८

राधा नंदकुमारको, सुमिरन कर दिन रैंन।
तातें सब संकट टरें, चित्त उपजें अति चेंन ॥१६६

तिहारे नेंन करें सुभ सेंन, रंगीले नेंन करें सुभसेंन।
करत सु चोट ओट घूंघटके, मनहू सुमनसर मेंन ॥२००

पलकन झपकि झुकि झुकि अुछरन, चलन चपल चव अेंन।
विकट कटाछ तिरिछें चितवत, मनुहर मन हरि लेंन ॥२०१

उमंग तरंग रंग उपजाय अनंग अंग, चित्त देह दहित चेंन।
केहर मांन पीथलके प्रभुकों, वस कीनें रस दें न ॥२०२

संपूर्णम्

परिशिष्ट २

शब्दार्थ

अभीत सो=निशंक होकर
अनिल=आग
अवनी=पृथ्वी
इंदु बधु=वीर बहूटी
उदग्गन=उडगन
उडईस=चन्द्र
उलही=उल्लसित
उसांसन=उच्छवास
ऊंन्यो घन=उमड़ा हुआ बादल
ऐंन=हरिण
अैंन=घर
ओधि=अवधि
कबरी=वेणि
कटाच्छन=कटाक्ष
कलच्छां=कलश
कलधूत=स्वर्ण
कामरी=कम्बल
कोकनद=कमल
कोर=करोड़
कंबु=शंख
कंजु मुषी=कमल मुषी
षुशाली=खुशी
षूबीसों=खूबी से
षोरी=गली
घनसार=कपूर
घटकी=शरीर की
घटकी=घड़े की
चामीकार=स्वर्ण
विचच्छन=विलक्षण
चंचरीट=चंचरीक
छोल=तरंग
जरदोजी=जरी के वस्त्र
जलजात=कमल
जांम=प्रहर
जांमिनी=यामिनी
जुवती=युवती
तड़िता=बिजली
तरोना=कान का एक आभूषण
तलवेली=व्याकुलता
दुकूल=वस्त्र
दु:ष दंदा=दुख द्वन्द्व
दुरद=हाथी
द्रुमु=वृक्ष
दू=दो
दोति=दवात
द्योंम=दिन
नकीब=चोबदार
नपच्छत=नखक्षत
पचिका=पिचकारी
पटुका=ओढनी
पन्नग=सर्प
परजंक=पर्य्यंक
प्राची=पूर्व दिशा
पेरनेको=तैरने को
पंचबान=कामदेव
फटक=स्फटिक
बगनकी=बगुलों की
बनिता=स्त्री
बरही=मोर
बाजत बयारो=हवा चल रही है

बारन=हाथी
बारी=फुलवारी
बासुर=दिन
बिथा=व्यथा
बिहान=प्रात:काल
बिहांनी=बीत गई
बेह=विधाता
बेहके=विधाता के
भांवरी=चक्कर लगाते हैं
मकरध्वज=कामदेव
मधि=मध्य
मनसिज=कामदेव
महर=कृपा
महरलाल=नन्दमहर के पुत्र
निसि राका=पूर्णमासी
मुरछांही=मूर्च्छा
मेंन=कामदेव
रद्दन=दांत
रवनी=रमणी
रसकारी=रसीली
रिषिनारी=अहिल्या
व्रहको=विरह का
व्याल=सांप
विधु वदनी=चन्द्र मुखी
सदामदसे=सदा से
सुषदे=सुखकारी
सुतासविता=यमुना
सुमनसर=पुष्पबाण
सुम्मन=सुमन
सेंन=शयन
सोंज=सामग्री
सोंह=शपथ
हाटक=स्वर्ण

शुद्धिपत्र

शुद्ध	छन्द संख्या	पृष्ठ
सवैया	१२	२
सवैया	८१	१८
कवित्त	८२	१८
सवैया	८४	१९
दोहा	८५	१९
कवित्त	८६	१९
कवित्त	८७	२०
सवैया	९२	२१
कवित्त	९४	२२
सवैया	९६	२३
सवैया	१००	२४
कवित्त	११८	२९
सवैया	१५३	४०
कवित्त	१५५	४०
सवैया	१९२	४९
पद	२००	५०

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला के कुछ ग्रन्थ

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृत भाषा ग्रन्थ— १. प्रमाणमञ्जरी–तार्किक चूड़ामणि सर्ववेदाचार्य, मूल्य ६.००। २. यन्त्रराज रचना–महाराजा सवाई जयसिंह मूल्य १.७५। ३. महर्षिकुलवैभवम्–स्व० श्री मधुसूदन ओझा मूल्य १०.७५। ४. तर्कसंग्रह–पं० क्षमाकल्याण मूल्य ३.००। ५. कारकसंबंधोद्योत–पं० रभसनन्दि मूल्य १.७५। ६. वृत्तिदीपिका-पं० मौनिकृष्ण मूल्य २.००। ७. शब्दरत्नप्रदीप मूल्य २.००। ८. कृष्णगीति–कवि सोमनाथ मूल्य १.७५। ९ शृङ्गारहारावलि–हर्ष कवि मूल्य २.७५। १०. चक्रपाणिविजयमहाकाव्यं–पं० लक्ष्मीधर भट्ट मूल्य ३.५०। ११. राजविनोद– कवि उदयराज मू० २.२५। १२. नृत्तसंग्रह मूल्य १.७५। १३. नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग–महाराणा कुंभा मूल्य ३.७५। १४. उक्तिरत्नाकर–पं० साधुसुन्दर गणि मूल्य ४.७५। १५. दुर्गापुष्पांजलि-पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी मूल्य ४.२५। १६. कर्णकुतूहलं तथा कृष्णलीलामृतं–भोलानाथ मूल्य १.५०। १७ ईश्वर विलास महाकाव्य, श्रीकृष्ण भट्ट, मूल्य ११.५०।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ—१. कान्हडदे प्रबन्ध–कवि पद्मनाभ मूल्य १२.२५। २. क्यामखांरासा–कवि जान मूल्य ४.७५। ३. लावारासा–गोपालदान मूल्य ३.७५। ४ वांकीदासरी ख्यात–महाकवि वांकीदास मू० ५.५०। ५. राजस्थानी साहित्य-संग्रह भाग १. मूल्य २.२५। ६. जुगल-विलास–कवि पीथल मूल्य १.७५।

प्रेसों में छप रहे ग्रन्थ

संस्कृत भाषा ग्रन्थ—१. त्रिपुरा भारती लघुस्तव–लघुपंठित। २ शकुनप्रदीप–लावण्य शर्मा। ३. करुणामृतप्रपा–ठक्कुर सोमेश्वर। ४. बालशिक्षा व्याकरण–ठक्कुर संग्रामसिंह। ५. पदार्थरत्नमञ्जूषा, पं० कृष्णमिश्र। ६. काव्यप्रकाश संकेत–भट्ट सोमेश्वर। ७. वसन्तविलास फागु। ८. नृत्यरत्नकोश भाग २। ९. नन्दोपाख्यान। १०. रत्नकोश। ११. चान्द्रव्याकरण। १२. स्वयंभू छंद–स्वयंभू कवि। १३. प्राकृतानंद–कवि रघुनाथ। १४. मुग्धावबोध आदि औक्तिक संग्रह। १५. कविकौस्तुभ–पं० रघुनाथ मनोहर। १६. दशकण्ठवधम्–पं० दुर्गाप्रसाद। १७. पद्यमुक्तावली–कवि कृष्ण भट्ट। १८. रसदीर्घिका–विद्याराम भट्ट।

राजस्थानी और हिन्दी भाषाग्रन्थ– १. मुंहतानैणसीरी ख्यात–मुंहतानेणसी। २. गोराबादल पदमिणी चऊपई–कवि हेमरतन। ३. राठोड़ वंशरी विगत आदि वार्ताएँ। ४. सुजान संवत–कवि उदयराम। ५. चन्द्रवंशावली–कवि मोतीराम। ६. राजस्थानी दूहा संग्रह। ७. वीरवाण–ढाढी बादर। ८. कवीन्द्रकल्पलतिका–कवीन्द्राचार्य।

इन ग्रन्थोंके अतिरिक्त अनेकानेक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी और हिन्दी भाषा में रचे गये ग्रन्थोंका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला के कुछ ग्रन्

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृत भाषा ग्रन्थ— १. प्रमाणमञ्जरी–तार्किक चूड़ामणि सर्व ६·००। २. यन्त्रराज रचना–महाराजा सवाई जयसिंह मूल्य १·७५। ३. महर्षिकु श्री मधुसूदन ओझा मूल्य १०·७५। ४. तर्कसंग्रह–पं० क्षमाकल्याण मूल्य कारकसंबंधोद्योत–पं० रभसनन्दि मूल्य १·७५। ६. वृत्तिदीपिका-पं० मौनिकृष्ण ७. शब्दरत्नप्रदीप मूल्य २·००। ८. कृष्णगीति–कवि सोमनाथ मूल्य १·७५। रावलि–हर्ष कवि मूल्य २·७५। १०. चक्रपाणिविजयमहाकाव्यं–पं० लक्ष्मी ३·५०। ११. राजविनोद– कवि उदयराज मू० २·२५। १२. नृत्तसंग्रह मूल्य नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग–महाराणा कुंभा मूल्य ३·७५। १४. उक्तिरत्नाकर– गणि मूल्य ४.७५। १५. दुर्गापुष्पांजलि–पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी मूल्य ४·२५ कुतूहलं तथा कृष्णलीलामृतं–भोलानाथ मूल्य १·५०। १७. ईश्वर विलास महाक भट्ट, मूल्य ११.५०।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ—१. कान्हडदे प्रबन्ध–कवि १२·२५। २. क्यामखांरासा–कवि जान मूल्य ४.७५। ३. लावारासा–गोप ३.७५। ४ वांकीदासरी ख्यात–महाकवि वांकीदास मू० ५·५०। ५. राजस्‍ संग्रह भाग १, मूल्य २·२५। ६. जुगल-विलास–कवि पीथल मूल्य १.७५।

प्रेसों में छप रहे ग्रन्थ

संस्कृत भाषा ग्रन्थ—१. त्रिपुरा भारती लघुस्तव–लघुपंठित। २ लावण्य शर्मा। ३. करुणामृतप्रपा–ठक्कुर सोमेश्वर। ४. बालशिक्षा व्याकरण– सिंह। ५. पदार्थरत्नमञ्जूषा, पं० कृष्णमिश्र। ६. काव्यप्रकाश संकेत–भट्ट सोमेश्वर विलास फागु। ८. नृत्यरत्नकोश भाग २। ९. नन्दोपाख्यान। १०. रत्नकोश। करण। १२. स्वयंभू छंद–स्वयंभू कवि। १३. प्राकृतानंद–कवि रघुनाथ। १४ आदि औक्तिक संग्रह। १५. कविकौस्तुभ–पं० रघुनाथ मनोहर। १६. दशक दुर्गाप्रसाद। १७. पद्यमुक्तावली–कवि कृष्ण भट्ट। १८. रसदीर्घिका–विद्याराम

राजस्थानी और हिन्दी भाषाग्रन्थ—१. मुंहतानैणसीरी ख्यात–मुंहत गोराबादल पदमिणी चऊपई–कवि हेमरतन। ३. राठोड़ वंशरी विगत आदि सुजान संवत–कवि उदयराम। ५. चन्द्रवंशावली-कवि मोतीराम। ६. राजस्थानी ७. वीरवांण–ढाढी बादर। ८. कवीन्द्रकल्पलतिका–कवीन्द्राचार्य।

इन ग्रन्थोंके अतिरिक्त अनेकानेक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन रा हिन्दी भाषा में रचे गये ग्रन्थोंका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है।
